चतुर्थ अध्याय

रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी पात्र एवं उनके जीवन की समस्याएँ

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY

अ) नारी पात्र

1) कब तक पुकारूँ

2) प्यारी, कजरी, चंदा, धूपो, बेला, सौनो, सूसन ।

2) मुर्दो का टीला

नीलूफर, हेका, वेणी, चंद्रा, वीणा, षोड़शी ।

आ) समस्याएँ

प्रस्ताविका

1) बहु-विवाह की समस्या

2) अनमेल विवाह की समस्या

3) सौतियाँ डाह की समस्या

4) विधवा समस्या

5) दासत्व की समस्या

6) बलात्कार की समस्या

7) रखैल समस्या

8) कुँवारी माता की समस्या

9) दैहिक विक्रय की समस्या

10) सामाजिक कुरीतियों की समस्या

11) पति-पत्नी के रिश्तों की समस्या

12) आत्महत्या की समस्या

13) आर्थिक समस्या

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय

" रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी पात्र एवं उनके जीवन की समस्याएँ "

" कब तक पुकारूँ " में चित्रित नारी पात्र

आलोच्य उपन्यास ' कब तक पुकारूँ ' में प्यारी, कजरी, प्रमुख नारी पात्र हैं । चंदा, धूपो, बेला, सौनो, सूसन गौण नारी पात्र हैं ।

।) प्यारी

प्यारी इसीला करनट और सौनो की बेटी तथा सुखराम की पहली पत्नी है । वह दरोगा रूस्तमखाँ की रखैल एवं कई पुरूषों को अपना शरीर बेचनेवाली है । प्यारी के चरित्र में हमें आदिम युग के नारी के दर्शन होते हैं । उस काल में नारी अपना जीवन स्वच्छंदता से यापन करती थी । आहार - विचरण में स्वतंत्र थी । अनेक पुरूषों से अनैतिक सम्बन्ध रखती थी फिर भी समाज उसे अनुचित नही मानता था । उस युग में माँ को खोजना आसान था मगर पिता की खोज असम्भव थी । ' सेक्स ' के विषय में नारी पर कोई भी निर्बन्ध नहीं थे । उस युग की भाँति करनट जाति के रीति-रीवाजहैं जिसमें प्यारी का जन्म हुआ है ।

तेरह साल की उम्र में प्यारी अपनी शारीरिक प्यास बुझाने के लिए कंजरो की बस्ती में जाती है । सुखराम से विवाह होने के पश्चात् प्यारी अन्य पुरूषों से शरीर सम्बन्ध स्थापित करती है । प्यारी ऐसे यौन सम्बन्ध अनैतिक नही मानती । करनट जाति के स्त्री-पुरूष सम्बन्धी विचार

सभ्य समाज के विचारों से भिन्न हैं । अपने पति को छोड़कर अन्य पुरूषों से यौन सम्बन्ध स्थापित करना या अपनी पत्नी को छोड़कर अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रखना अनुचित नहीं समझा जाता । कितने पुरूषों ने प्यारी को उपभोगा है इस बारे में कहते हुए वह जरा भी शरमाती नहीं बल्कि इसके बारे में खुलकर बताती है । एक बार सुखराम शराब के नशे में प्यारी से शरीर सुख की याचना करता है तब प्यारी बेशर्मी से कहती है -- " अभी नहीं. मैं अभी थकी हूँ । अभी तो बौहरे का बेटा गया है । " [1]

करनट जाति का दुःख, पीड़ा, दर्द, प्यारी ने देखा है, भोगा है और जाना है । करनट खेल दिखाते हैं । पेट के लिए चोरी करते हैं । पुलिस उन्हें पकड़ लेती है और जेल में बन्द कर देती है । पुलिस , ठाकुर तथा उच्च वर्ग के लोग उनका शारीरिक एवं मानसिक शोषण करते हैं । उन्हे चुपचाप सहना पड़ता है । प्यारी का इनके दुःखी जीवन के बारे में सोचना वास्तविक तथा जीवन का नग्न सत्य है -- " वहाँ क्या है ? वहाँ मरद पुलिस की बाँट जोहते हैं औरत भूखे बच्चों के लिए पराये मर्दों की और फिर दुःख ही दुःख । " [2]

दरोगा करनटों की टोली को हमेशा सताता है । प्यारी के यौवन को उपभोगने के लिए सुखराम को पीटता है । अतः सुखराम एवं टोली के खातिर प्यारी दरोगा की हविश बुझाने जाती है । वास्तविक प्यारी विवश है लेकिन सुखराम को प्यारी का यह बर्ताव पसन्द नहीं है । जिद्दी, शराबी प्यारी के सामने सुखराम के अन्दर का ठाकुर हर बार पराजित हो जाता है । ' ' सेक्स ' के बारे में वह अपने पति के बातों को अनदेखा करती है । सुखराम उसे ठाकुर की बहू कहकर समझाता है किन्तु प्यारी के चाल-चलन में कोई बदलाव नहीं होता । सुखराम की कुलीनता को ठेस पहुँचती है अतः वह उत्तेजित होकर प्यारी से कहता है -- " तू मर क्यों नहीं जाती ? तब प्यारी सहज भाव से जवाब देती है -- इतिसी बात के लिए मरना मुझे नहीं आता । औरत को औरत का ही काम करना पड़ता है । इसमें ऐसी बात ही क्या ? " [3] प्यारी के शरीर को कोई अन्य पुरूष वासनामयी दृष्टि से देखे यह बात सुखराम बर्दाश्त नहीं करता । वह क्रोधित होकर प्यारी को गालियाँ देता है, रण्डी कहता है, तब प्यारी बहुत ही दुःखी होती है, अपनी विवशता पर रोते हुए

कहती है -- " धिक् रे राजा मरद तेरी आँखों में शील नहीं रह गया है । औरत को बचाना तेरा काम है । ... तू मुझे बचा । मैं और नटनियों -सी नहीं हूँ । मैं क्या करूँ ? जोबन दिखाती नहीं, दिख जाता है । उसे क्या ड़िबियाँ में बन्द करके धर लूँ ? तुझे सरम नहीं । ... पेट में रख के छिपाना नहीं भाता तुझे । " [4] प्यारी के इस वक्तव्य में उसकी इमानदारी और भोलापन दिखाई देता है । प्यारी अपनी बातों का खुद स्पष्टीकरण करती है -- " औरत के काम में औरत को सरम नहीं होती । " [5] सुखराम प्यारी के तन विक्रय को रोकने की बहुत कोशिश करता है किन्तु प्यारी मजबूर है । वह सुखराम को मन से चाहती है । वह अपना शरीर अन्य पुरूषों को देती है पर मन नहीं देती । प्यारी सुखराम को समझाती है -- " तू क्यों बूरा मानता है ? मरद के काम में क्या मरद सरम करता है । मेरी तेरी चाहत है । संग तो तेरे ही रहूँगी । पहले कंजरों में जाती थी तब वहाँ क्या मैंने दूसरों से नाता जोड़के तुझे छोड़ दिया था ? " [6]

सुखराम प्यारी के व्यवहार से असन्तुष्ट है । वह उसे किसी अन्य रियासत में जाकर तामोलिन बनने के बारे में कहता है । किन्तु ठाकुर के स्वप्न देखनेवाले सुखराम को यथार्थ की धरातल पर खड़ा रहने के लिए प्यारी उसे मजबूर करती है । प्यारी में प्रबल जातीय संस्कार है तथा आत्मसम्मान है । वह नटनी बनकर रहना चाहती है । वह सुखराम के प्रस्ताव को ठुकराते हुए कहती है -- " तामोलिन की क्या बचत है मेरे निखट्टू । तू बनिया बामन बन, ठाकुर बन पर मैं तो नटिनी की नटिनी हूँ । " [7] प्यारी स्वच्छंद विचरण करना चाहती है । वह बाँस पर नाचने का खेल दिखाती है । प्यारी कभी भी पराधिनता स्वीकार नहीं करती । अपने पति सुखराम का वह सम्मान करती है किन्तु उसकी दासी बनना नहीं चाहती । उसके मन में जरा भी छल कपट की भावना नहीं है । वह सुखराम से कह देती है -- " देख । मैं भंगीन - चमारिन नहीं जो मरद की गुलाम बनकर रहूँ । पर मेरा मन तेरा है । जिस दिन मन तुझसे हट जाएगा, मैं तुझे छोड़कर चली जाऊँगी । " [8] उसका यह कथन प्रगतिशीलता का प्रतीक है । युगो-युगोंसे पुरूषवर्ग नारी जाति को अनेक बन्धनों में जखड़ता आ रहा है । प्यारी का यह कथन पुरूषों की मानसिकता पर करारी प्रहार करता है ।

प्यारी अच्छी तरह जानती है कि सुखराम उसे बहुत चाहता है । तभी तो उस पर

इतना क्रोधित हो जाता है । सुखराम द्वारा पीटने पर वह मानसिक तृप्ति महसूस करती है । प्यारी अपना संतोष प्रकट करते हुए कहती है -- " तुझे जलाती हूँ ! तू चिढ़ता है । मारता है । तू मुझे मन से न चाहता होता तो तू मुझे मारता क्यों ?... तेरे हाथ से मरूँगी तो मेरे मन की आग तो बुझ जाएगी । " [9] यहाँ प्यारी उन भारतीय नारियों का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने पति के हाथों से मरना बड़ी ही पुण्य की बात समझती है ।

प्यारी ऐशो-आराम की जिन्दगी तथा दूसरों पर हुकूमत करना चाहती है । वह सुखराम को भी हर तरह का सुख एवं सुविधा देना चाहती है तथा उसक निड़र जीवन के लिए प्यारी दरोगा रूस्तमखाँ की रखैल बनती है । उसने देखा है कि उच्च वर्ग के लोग करनटों तथा उनकी औरतों पर घृणित अन्याय करते हैं । नटों को गिरफ्तार करते हैं तथा उनको छुड़ाने के लिए उनकी औरतों के शरीर का सौदा किया जाता है । सुखराम एवं करनटों की टोली पर हुए अत्याचारों का प्रतिशोध तथा उनकी सुरक्षा के लिए प्यारी अपना शरीर जिसका समाज की नजरों में कोई मूल्य नहीं, वह शरीर भ्रष्ट है उसे कुछ दिनों के लिए प्यारी रूस्तमखाँ के पास गिरवी रखती है । प्यारी में स्त्रियोचित स्वाभिमान है । प्यारी सुखराम से कहती है -- " ... अगर तुझे महलों में नहीं ले जा सकती तो अपने को बेचकर तुझे हुकूमत दूँगी । फिर तुझे पुलिसवाले ड़रा न सकेंगे । ... मैं रूस्तमखाँ के यहाँ बैठ जाऊँगी । तू मेरे पास रहेगा । " [10] इस समाज में प्यारी यह अनोखा, अनपहचाना रिश्ता स्थापित कर देती है । प्यारी मजबूरी से रूस्तुमखाँ की रखैल बनती है । अतः उसके पास रहने के बारे में वह सुखरान से कहती है -- " वह मेरा पराया है । तू मेरा अपना है । तू न रहेगा तो मैं किसके सहारे जियूँगी । " [11] प्यारी के इन शब्दों में अनोखा प्यार एवं कुर्बानी है जो अमर प्यार के लिए दी है । प्यारी का प्रेम शीतल छाँव है, जिसके तले सुखराम मन की शान्ति पाता है । जीवन की पूर्ण तृप्ति का साधन यही मन का प्रेम है । समाज में जो पाप-पुण्य है वह सब मनुष्य निर्मित है । इस में उलझकर मनुष्य दुःखी होता है । सुखराम ने महसूस किया है कि अपने मांसल शरीर और अप्रतिम सौन्दर्य से मोहित करनेवाली औरत, औरत ही नहीं बल्कि देवी का रूप भी होती है । प्यारी रूस्तमखाँ की रखैल बनकर हुकूमत के बलपर कुछ दरिन्दों से बदला लेती है जिन्होंने उसके साथ दगा किया था । करनट टोली को वह निर्भय कर देती

है । लेकिन रूस्तमखाँ के यहाँ तमाम अधिकारों एवं सुख-सुविधाओं को पाकर भी प्यारी प्रसन्न नहीं है । यहाँ उसकी स्थिति पिंजरे में कैद पंछी की तरह हो जाती है, जो उसके संस्कारों में नहीं है । वह तो आजाद नटनी है । किन्तु मन में सोचती है कि सुखराम से इतना लगाव किस लिए उसके पास रहने से दु:ख ही दु:ख है परन्तु इसके बावजूद भी उसे विश्वास है कि उसकी जवानी समाप्त होते ही रूस्तमखाँ उसे मुरझाए हुए फूल की तरह फेंक देगा तभी उसका अन्तिम सहारा सुखराम ही होगा । प्यारी के चरित्र की इस महानता से कुलीन नारियों का वह ईर्षापात्र बन सकती है तथा पाठक भी विमुग्ध हो जाते हैं ।

सुखराम पर प्यारी का जो एकाधिकार है उसे वह कायम रखना चाहती है । उस अधिकार में किसी दूसरी औरत को हिस्सेदार नहीं बनाना चाहती । प्यारी की माँ सौनो पति के अभाव में अपने दामाद सुखराम की ओर शरीर सुख की लालसा से आकर्षित होती है, तब प्यारी उसका दृढ़तापूर्वक विरोध करती है । रूस्तमखाँ के यहाँ जाते समय प्यारी सुखराम को चेतावनी देती है कि किसी दूसरी औरत को तुम्हारे जीवन में आनी नहीं दूँगी । रूस्तमखाँ के कारण प्यारी यौन-बीमारी का शिकार हो जाती है । मन से चाहकर भी वह सुखराम को शरीरसुख नहीं दे सकती उससे दूर रहती है । उस समय सुखराम के जीवन में कजरी आती है । कजरी सुखराम का मन जीत लेती है । सुखराम और कजरी के सम्बन्धों को सुनकर प्यारी तड़प उठती है । वह सुखराम से कहती है -- " मैं तेरी कजरी को जूतों से पिटवाऊँगी । मैं तुझे बाजार में घिसटाऊँगी । "[12]
मानो प्यारी पर दु:खों का पहाड़ टूट पड़ा । सुखराम की चाहत के बलपर उसने अपने तन का सौदा रूस्तमखाँ से किया था । किन्तु सुखराम ने उसका विश्वासघात किया, उसके पैर ड़गमगाने लगे । जीने के लिए प्यारी के पास कोई सहारा नहीं बचा वह अपना जीवन समाप्त करना चाहती है । कजरी को लेकर दोनों में विवाद होता है । सुखराम कहता है -- " तू हजार मरद कर सकती है, मैं दो लुगाई नहीं रख सकता ? " [13] प्यारी इसका जो जबाब देती है जिससे पतिव्रता नारी के मनपर गहरा आघात हो जाता है । प्यारी कहती है -- " नहीं तू झूठ कहता है । मैंने एक किया । वह तू है । बाकी की पैसे कमाने के लिए हैं । उनको मैंने दिल नहीं दिया । पर तूने कजरी को दिल दे दिया । तन बंट सकता है मेरे राजा मन नहीं बंट सकता । " [14] अत:

प्यारी ने नारी जाति की विवशता को महसूस किया है । कोई भी नारी अपनी इच्छा से तन का सौदा नहीं करती । इसके पीछे कोई दबाव होता है, उसे विवश किया जाता है । लेकिन पुरूष जो करता है, स्वार्थ के खातिर करता है । प्यारी ने स्त्री-पुरूषों के आचरण में जो भेद है उसे अच्छी तरह स्पष्ट किया है । " लुगाई जो करती है वह मजबूर होकर पर मर्द जो करता है तो मस्त होकर, उसको कोई रोक नहीं । " [15] प्यारी का शरीर अपवित्र है, मगर मन पवित्र है । शरीर कालान्तर में नष्ट होता है किन्तु मन अमर रहता है । जिस नारी का शरीर भ्रष्ट तथा मन पवित्र है उसे समाज वेश्या कहकर उसको घृणा की दृष्टि से देखता है । लेकिन ऐसी भी नारियाँ होती है जो शरीर से पवित्र मगर मन से अपवित्र होती है तथा शरीर और मन दोनों से भ्रष्ट होती है किन्तु कुलीनता की आड़ में उन्हें समाज पतिव्रता मानता है । प्यारी जैसे नारी को दुराचारिनी समझता है । वास्तविक प्यारी निष्कलंक है । अनेक पुरूषों पर हावी रहनेवाली तथा यौन-सम्बन्ध रखनेवाली प्यारी सुखराम से कहती है -- " नाता जोड़ना और बात है मन की होके रहना और बात है ।" [16] प्यारी का चरित्र खुली किताब की तरह पाठकों के सामने है ।

प्यारी में त्याग भावना कूट - कूट कर भरी हुई है । अपनी यौन बीमारी से सुखराम के बचाव के लिए वह उसको दूर रखती है मगर उसे कुछ भी बताती नहीं । सुखराम उस रहस्य को नहीं समझ पाता । इस बात को लेकर दोनों मे बार-बार झगड़ा हो जाता है । किन्तु उसकी बीमारी के बारे में पता चलते ही वह प्यारी के प्रेम की सच्चाई को जान जाता है । बीमारी की इस हीन अवस्था में प्यारी ईश्वर से प्रार्थना करती है -- ' मुझे उठा ले । अपने पास बुला ले । दुःख देकर मुझे जिला जिला कर न मार । मेरा पाप क्या हे पराये मर्दो के संग सोई हूँ तो तूने मेरी जात ऐसी बनाई क्यों जिसे कोई हक नहीं । तूने मुझे औरत बनाया क्यों ? तभी तो आज यह बीमारी भोग रही हूँ । " [17] प्यारी के इस कथन में समाज की पीड़ित, बहिष्कृत भोग्या नारी की दयनीयता, निर्बलता, असहायता, स्पष्ट होती है । कजरी और प्यारी का रिश्ता सौतन का है ।

पहले तो वह कजरी को अस्वीकार करती है । किन्तु कुछ समय पश्चात् वह समझ जाती है कि उसकी अनुपस्थिती में कजरी ने सुखराम जो सुख दिया है उसे वह स्वयं न दे सकी । अब प्यारी कजरी को सगी बहन से भी ज्यादा स्नेह करती है । सुखराम ही दोनों का देवता है जिसकी पूजा दोनों भी मन से करती है । प्यारी सुखराम से कहती है -- " तू कहेगा तो कजरी की बांदी बनकर रह लूँगी, उसने तब तुझे सुख दिया जब मैं न दे सकी । " [18] कजरी के मन का बड़प्पन प्यारी स्वीकार करती है । प्यारी में समझदारी और सहानुभूती है । किसी भी बात पर वह गहराई से सोचती है इसके बाद ही किसी निर्णय पर पहुँचती है ।

प्यारी में अन्याय के प्रति विरोध करने की हिम्मत है । अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए प्यारी जान की पर्वा नहीं करती । उसमें अदम्य साहस है । रूस्तमखाँ के यहाँ रहकर वह सुखराम को अपने अनुकूल बनाये रखती है तथा रूस्तमखाँ के विरूद्ध रचे षड़यंत्र के बारे में उसे पता नहीं लगने देती । इससे प्यारी में जो नटनी का चातुर्य है वह दिखाई देता है । बाँके गुण्ड प्रवृत्ति का है । उसने अपने कुछ साथियों से मिलकर सुखराम को पीटा । प्यारी सुखराम पर हुए अन्याय को सह न सकी । उसने बाँके पर छूरे से वार किये । लेकिन अंधेरे के कारण वह सिर्फ लहुलुहान हो गया । रूस्तमखाँ प्यारी के बारे में अनाब-शनाब बकता है, उसे गंदी गालियाँ देता है तब प्यारी चुप नहीं बैठती । वह रूस्तमखाँ को धमकाती है -- " गोद गोद के मारूँगी । कुत्ता बना रह नहीं तो याद रख । मैं हूँ नटिनी । अगर प्यास लग आई तो लहू पी के बुझाऊँगी । " [19] प्यारी के इन शब्दों में उसका धैर्य तथा नारी का सबला रूप दिखाई देता है । इस रूप से अत्याचारी पुरूष में ड़र पैदा हो जाता है ।

बाँके दो ठाकुरों की सहायता से धूपो चमारिन की अस्मत लूटता है । वह सुखराम की हत्या का षड़यंत्र रचाता है । कजरी को शरीर सुख की माँग करता है । अतः इस जुल्म अन्याय के प्रतिकार करने के लिए प्यारी और कजरी दोनों मिलकर मुकाबला करती है । बाँके के नीच कर्मो की सजा देने के लिए प्यारी और कजरी सूत्रबद्ध योजना बनाती है । कजरी बाँके को शराब

पीलाकर बेहोश करके कटार से उसकी हत्या कर देती है । कजरी के इस साहसपूर्ण कार्य को देखकर प्यारी खुशी से पागल हो जाती है ।\ खुले मन से कजरी को कह देती है -- " मैं तेरे चरण छूती हूँ । तू सचमुच सुखराम के जोग है, मैं कहाँ ? " [20] परिस्थिती को समझकर रूस्तमखाँ कजरी पर हमला करना चाहता है । इससे पहले प्यारी अपनी कटार उसके पेट में घुसेड़ देती है और उसका काम तमाम कर देती है । रूस्तमखाँ को खत्म करके प्यारी सुखराम के प्रति वफादारी का सबुत पेश करती है । रूस्तमखाँ के खून के पश्चात् प्यारी, कजरी और सुखराम वहाँ से भाग जाते हैं । अन्त में रूस्तमखाँ प्यारी के पेट में लाथ मारता है । प्यारी के इस पेट दर्द का इलाज नहीं होता । इसमें ही उसकी मृत्यु हो जाती है ।

प्यारी स्वच्छंद है । वह जो चाहती है, उसे करके दिखाती है । इसके लिए वह किसी की अनुमति की अपेक्षा नहीं करती । इसमें विचारो की दृढ़ता, बुद्धिवाद, साहस, सहनशीलता, चातुर्य, धैर्य, क्रियाशीलता, स्वाभिमान, आत्मगौरव है । निड़रता, व्यंग्य परिहास है । प्यारी का सचित्र सजीव लगता है । भले ही समाज उसे तन बेचनेवाली वेश्या नारी कहे मगर इसके लिए वह मजबूर है, इसका कारण समाज है । अनेक कठिनाइयों और विवशताओं के बावजूद भी सुखराम के प्रति उसका प्यार एकनिष्ठ रहता है । प्यारी उन नारियों का प्रतीक है जो देश की रक्षा के लिए अपना तन, मन, धन समर्पित करती है । प्यारी अपनी जाति तथा सुखराम की रक्षा के लिए रखैल बनती है । सचमुच प्यारी प्रेम, बलिदान, समर्पण की अमर ज्योति है । प्यारी का चरित्र महान है ।

2) **कजरी**

कजरी सुखराम की दूसरी पत्नी है । मनोविज्ञान के आधारपर उपन्यासकार ने कजरी का चित्रण किया है । जिस पुरूष में पुरूषत्व, स्वाभिमान, सच्चाई, वफादारी, आत्मा की पवित्रता होती है, उसे ही कोई भी नारी दिल से चाहती है । कजरी भी ऐसी नारी है जो अपने निर्बल, पुरूषत्वहीन, कुरूप, शराबी पती कुरी का साथ **छोड़कर** सुखराम की ओर आकर्षित होती है । प्यारी रूस्तमखाँ के घर बस जाने के पश्चात् कजरी सुखराम से सम्बन्ध स्थापित करके विवाह के बन्धन में बन्ध जाती है ।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

प्यारी की तरह कजरी भी दिखने में अनुपम सुन्दर है । सावली मूरत, सुते हुए गाल, आँखो में काजल, नाक में बुल्लाक पहनती थी । वह हमेशा हँसमुख और संतुष्ट रहती है । सुखराम से विवाह होने से पहले कजरी भी नटनियों का व्यवसाय करती थी । किन्तु विवाहोपरान्त वह सुखराम से अपने तन, मन से एकनिष्ठ रहती है । वैवाहिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण सहारा है पति - पत्नी का एक दूसरे के प्रति विश्वास एवं समर्पण । कजरी में यह समर्पण और विश्वास है । सुखराम के साथ रहने से उसमें सेवा भावना बढ़ने लगती है । वह अपने पति सुखराम की सेवा करना अपना परम कर्तव्य समझती है । वह सुखराम से कहती है -- " तू सो जा, मैं तेरे पाँव दबा दूँगी ।"[21] नारी के लिए अधिक पीड़ादायक बात तो सौतिया डाह होता है । अनेक पत्नियाँ होने पर नारी में जो समर्पण भावना होती है वह सम्भव नही हो पाती । पति अपने पत्नियों में भेदभाव करता है तब सपत्नी का जीवन व्यथा से परिपूर्ण बन जाता है । कजरी अपनी सौत प्यारी के अस्तित्व को सोचकर ड़र जाती है क्योंकि कजरी के साथ रह कर भी सुखराम प्यारी को मन से उतना ही चाहता है जितना पहले चाहता था । सुखराम के मन से प्यारी को हटाने का प्रयास कजरी करती है । प्यारी के विरूद्ध वह सुखराम के कान भर देती है -- " वह गद्दोंपर सोती है और तू ...., यहाँ भूरा के पास सोता है । दोनों ही तुम दो तरह के कुत्तों के पास सोते हो । यह वाला वफादार है, वह कटखना है । " [22] रूस्तमखाँ के घर रहकर भी प्यारी और सुखराम का आपसी लगाव, प्रेम कम नहीं होता । सुखराम उसे बार-बार उसे मिलने के लिए जाता है । सुखराम का यह लगाव कजरी को अच्छा नहीं लगता । वह सुखराम से कहती है -- " बड़ी जहरीली नागिन है कोई वह । दों घोड़ोंपर चढ़ती है एक साथ । तुझपर हुक्म चला रही है, हाजरी लगवा दी है ससुरी ने । " [23]

कजरी सुखराम को अपना सब-कुछ मानती है । उसके लिए कुछ भी करने को तैयार है । वह वार-बार सुखराम का हौसला बढ़ाती है । सुखराम की हर मुश्किल एवं सुख-दुःख में उसका साथ निभाती है । अपने आप को सुखराम को समर्पित करती है । उसमें जरा भी अहंकार नहीं है । प्यारी कजरी को देखना चाहती है किन्तु कजरी समझती है कि प्यारी रूस्तमखाँ की रखैल की हैसियत से तथा हुकूमत का रोब दिखाने के लिए उसे मिलना चाहती है इसलिए वह जाने से इन्कार करती है । वस्तुतः प्यारी उसे सुखराम की पत्नी के नाते मिलना चाहती है । सुखराम कजरी को समझाता है । कजरी सुखराम के वास्ते जाने के लिए राजी होती है । औरत का यह

है कि अपनी सौत से अधिक सुन्दर दिखने के लिए विभिन्न तरह का साजशृंगार करना । कजरी भी नये कपड़े तथा सजधजकर जाना चाहती है । उसमें स्त्रियोचित स्वाभिान है तथा उसपर नटिनीपन हावी है । एक स्थान पर वह कहती है -- " वह (प्यारी) अगर हाथभर तेरा मानती है तो मुझे देखियो, डेढ़ हाथ तेरे कहने पर चलूँगी । तू कहे तो तलवार पर गर्दन धर दूँ । यह बनैनी -- बामनी मत समझ लिजो तू मुझे । दिल का सौदा है, देख लिजो । नटनी हूँ । असल नटनी । " 24 \कजरी और प्यारी में सौत का रिश्ता होने के कारण दोनों के मन में भी एक दूसरी के प्रति जलन होती है । लेकिन बाँके द्वारा सुखराम पर हुए हमले के कारण दोनों मिल जाती है । प्यारी के बर्ताव से कजरी सन्तुष्ट होती है । दोनों आपसी जलन एवं सौतिया डाह को भूलकर सुखराम के दुश्मनों को दोनों मिलकर समाप्त कर देती हैं । दोनों में नफरत की बजाय प्यार पलता है । प्यारी की मौत के बाद कजरी के मन पर गहरा आघात हो जाता है । वह प्यारी की जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकती । उसका करूण क्रन्दन सुनकर एक वृद्धा कहती है -- " सौत - सौत को काटती है, पर यहाँ दोनों ऐस रहती थी जैसे बहन हो, एक पेट की जाई भी सौत हो के दुहाई कर उठती है, पर यहाँ तो भगवान हार गया । " 25 प्यारी की मृत्यु के बाद कजरी सुखराम का एकमात्र सहारा बन जाती है ।

कजरी स्वभाव से स्वाभिमानी, संयमी, साहसी, निर्भीक तथा अपने निर्णय की पक्की नारी है । कजरी नटनी है अतः किसी के भी साथ यौन-सम्बन्ध स्थापित करने तथा किसी की रखैल बनन के लिए वह स्वतंत्र है । लेकिन सुखराम से शादी होने के बाद उसे यह स्वतंत्रता अनैतिक तथा अपने आदर्श के विरूद्ध लगती है । अपनी वासना को संयमीत करके पतिव्रता नारी की भाँति जीवन बिताती है । अपने पति सुखराम से जो कुछ सुख उसे मिलता है एवं उसका जो कुछ है उसे पाकर ही कजरी सन्तुष्ट है उसे और कुछ नहीं चाहिए । वह सुखराम से कहती है -- " मेरे पास सबकुछ है, जो कुछ है दूँगी नहीं, नये के लिए हाथ नहीं पसारती । " 26 कजरी का यह कथन सुनकर सुखराम महसूस करता है कि अधूरे किले की अहमियत पत्थर के ढ़ेर से अधिक नहीं है । कजरी का यह संयम, समर्पण सराहनीय है । कजरी की निर्भीकता कई स्थानोंपर दिखाई देती

है । एक बार जंगल में कई डाकू किसी अंग्रेजी मेम को उठाकर उसकी इज्जत लेना चाहते हैं । उस समय कजरी और सुखराम त्रस्त मेम को डाकुओं के चंगूल से छुड़ाते है । मेम को गले से लगाते हुए कजरी डाकुओं के सरदार को निड़रता से कहती है -- " तेरे बाप की लुगाई है जो मैं छोड़ दूँ ? मेरे रहते तू एक औरत की इज्जत बिगाड़ देगा ? अरे मै मर जाऊँगी पर हाथ न लगाने दूँगी ।"[27] मेम सूसन उसके साहस पर खुश होकर अपने यहाँ कजरी और सुखराम को नौकरी देती है । कजरी सुखराम के साथ अधूरे किले की सैर करती है चक्खनसिंह को फटकारती है ।

कजरी विशाल हृदय तथा तेज बुद्धिवाली नारी है । सूसन के घर वह वफादारी से नौकरी करती है । उसका दृष्टिकोण मानवतावादी है । सूसन के पिता अंग्रेज अफसर सॉयुरसाहब के साथ एक दिन बातों ही बातों में वह कहती है -- " सरकार मुलक तो सबका होता है । मानुस तो धरती पर जहाँ रहे । " [28] इस कथन से वह अंग्रेज साहब को भी निरूत्तर कर देती है । इसमें उसका भोलापन भी दिखाई देता है । सुखराम का बल, चातुर्य से कजरी पूरी तरह परिचित है । एक दिन लॉरेन्स, सुखराम, कजरी, सूसन शिकार के लिए जाते हैं । लॉरेन्स को कजरी बघेर को गोली मारने से मना करती है क्योंकि उसे सुखराम की शक्ति पर भरोसा है । अन्त में सुखराम बघेर को मार डालता है । कजरी की खुशी की कोई सीमा नहीं रहती ।

यौन-सम्बन्ध और विवाह के बारे में प्यारी के जो विचार है उससे भिन्न और कई अधिक क्रान्तिकारी विचार कजरी के हैं । प्यारी के अनुसार शादी के बाद भी पैसा कमाने के लिए अन्य पुरूषों से शरीर सम्बन्ध रखना अनुचित नहीं है । मगर कजरी के विचार से ऐसे सम्बन्ध अनैतिक है । लॉरेन्स सूसन पर जबरदस्ती करके उसके कौमार्य को भंग करता है । परिणाम स्वरूप सूसन गर्भवती रहती है । सुखराम इस चिन्ता में डूबा रहता है कि सूसन कुंवारी लड़की है । इसके विपरीत कजरी सूसन की इस स्थिति से सन्तुष्ट है क्योंकि इसमें उसे कोई भी गैर नहीं दिखाई देता । उसकी दृष्टि से बांझ नारी को समाज में जरा भी इज्जत नहीं मिलती । समय-समय पर उसकी प्रताड़ना और अपमानही होता है । घृणा के अलावा ऐसी नारी को कुछ नहीं मिलता । कजरी मानती है कि माँ होना नारी के लिए सम्मान की बात है । वह सुखराम से कहती है --

" उससे क्या हुआ ? ब्याह तो बिरादरी की बात है, बच्चा होना भगवान की कुदरत की बात है । यो हो चाहे त्यों हो, पर बच्चा तो बच्चा ही है, और उसका जनम तो एकही -सा होता है । पहले पाप हो जाए फिर पुण्य हो जाय यह समझ नहीं आता । " [29] कजरी के विचार से नारी जीवन की सफलता माँ बनने में है । चाहे वह किसी तरह भी माँ बने । यह नारी का प्राकृतिक अधिकार है । गर्भवती सूसन की विवाह की बातचीत में सुखराम से कह देती है -- " मैं अपना (विवाह) करके दिखा दूँ तुझे ? .. अच्छा तो बड़े लोग हम लोगों की तरह नहीं जिते मरते ? हम क्या मानूस नहीं है ? " [30] सूसन के विवाह में उसे कठिनता नजर नहीं आती । कजरी ऐसे नीतिनियम, रूढ़ि परम्परा, परवाह नहीं करती जो मानवता पर आघात करें तथा मानवता के विरोधी हैं । सूसन के नाजायज बच्चे को अपनाने के लिए कजरी बिना कोई शर्त रखे खुशी सेतैयार होती है । इसके लिए वह रूपये भी नहीं चाहती । इसे वह अपना फर्ज समझती है । वह कहती है --

" सरकार बच्चे का मोल नहीं लूँगी । वह तो देवता होता है । आपका नमक खाया है उसे निभाऊँगी । " [31]

कजरी का आचरण एवं विचार मानवतावादी, प्रगतिशील तथा क्रान्तिकारी है । उसमें नारी जाति का सम्मान है । वह नारी को अपवित्र नहीं मानती । उसे अपवित्र करता है समाज और समाज में रहनेवाले पुरूष । नारी की अनेक विभिन्नता के बावजूद नारी की जाति एक ही होती है । वह पुरूषवर्ग से पीड़ित है । कजरी नारी की तुलना धरती से करते हुए कहती है --

" लुगाई माँ बने और पाप हो जाए । लुगाई की कोख तो धरती माता है । धरती कहीं पाप करती है ? और फिर बच्चे का इसमें क्या दोष है ? " [32] कजरी के इस प्रश्न का कोई जबाब हमारे पास नहीं है । कजरी पुरूष जाति के व्यवहार एवं नारी के प्रति बर्तावों पर कड़ा व्यंग्य कसती है । पुरूष अपने पाप नारी पर थोपता है । उसे दोषी ठहराता है और खुद को निष्कलंक साबित करता है । इसके विपरीत नारी पुरूषों के साथ ऐसा बर्ताव करेगी तब समाज में प्रलय मच जाएगा । सुखराम सूसन के विवाह के पश्चात् उसके भविष्य के बारे में सोचते हुए कहता है --

" दूसरा मरद दूसरे मरद का बच्चा क्यों पाले ? " [33] इस पर कजरी जो जबाब देती है उसमें

कड़वी सच्चाई एवं पुरूषप्रधान संस्कृति पर कठोर प्रहार है । वह कहती है -- " दूसरी औरत दूसरी औरत का बच्चा कैसे पाल लेती है ? ... दुनिया है यह । झट से नाम धर दिया सौतेली माँ । बदनाम कर दिया औरतों को । यह भी सोचना है कभी की दुनिया में सौतेले बाप होते तो मरद कितने खून करते । " [34] पुरूष वर्ग के अन्याय, अत्याचारों का **पर्दा फाश** करते हुए तथा नारी जाति के दासत्व का रहस्य खोलते हुए कजरी बड़ी जोश से कहती है -- " अरे तू मरद हमी से जनम लेके हमारे ही हाथ-पाँव बांधो । तुमने लुगाई को बेवकूफ बना रखा है । **परवरता** . कह के खूब बनाया है । अब मैं क्या औरों के संग नहीं रही हूँ ? पर मजबूर थी । अब मुझमें खोट आ गया है ? तू प्यारी के संग था तो खोट आ गया है तुझमें ? " [35] नारी जो सृष्टि का विकास करती है उसे ही पुरूष अपमानित करता है । उसे खूबसूरत विशेषणों से सम्बोधित कर उसे गुलाम बनाता है । उसे कुकृत्य करने के लिए विवश कर देता है । इतना करने के बावजूद नारी को चरित्रहीन कहा जाता है । कजरी इसका विरोध करना चाहती है । कजरी के स्त्री-पुरूष सम्बन्धों लेकर सुखराम के मन में शक पैदा हो जाता है, इस कारण वह कजरी से पूछता है -- " " तो फिर तेरी राय में दुनिया में आदमी बस ऐसे ही जगह-जगह खाते - पीते रहे ? इस पर कजरी जबाब देती है -- " वा रे । बड़े खाने - पीने की बात करता है । आदमी आजाद होगा । अकल होगी तो कुएँ का पीये कि मन मानी नाली का भी पीता रहेंगा । " [36] कजरी को विश्वास है कि जन्म से कोई बुरा नहीं होता बल्कि इस दुनिया में आकर आदमी बुराई के पाठ सीखता है तथा इसके अनुसार अपना कर्म करता है ।

कजरी के विचार अनुभूति के आधार पर हैं । उसके पास किसी भी प्रश्न का जबाब है । उसके प्रश्नों में स्वाभाविकता, मानवता, समता तथा विश्लेषणात्मक बुद्धि की झलक दिखाई देती है । पतिव्रताहीन समाज में रहकर भी वह अन्त तक पतिव्रता नारी बनकर रही है । सुखराम की प्रेरणा एवं शक्ति बनकर रहती है । अन्त तक पति पर अपना अधिकार रखती है । कजरी सहनशील तथा संवेदनशील नारी है । दूसरों के दुःखों को देखकर उसे बहुत पीड़ा होती है । प्यारी की बीमारी एवं उसकी दयनीय **स्थिति** को जानकर कजरी उसकी मन से सेवा करती है । गर्भवती सूसन

को सहारा देती है । उसे जीने के लिए हौसला देती है । धूपो पर हुए अन्याय से चेतित हो उठती है।उ। उसमें प्रबल साहस एवं धैर्य है । परिस्थिति से समझौता करने की शक्ति है । अपनी बात को स्पष्ट करने की अदम्य क्षमता है । कजरी लढ़ना भी जानती है साथ-ही-साथ अपने प्यार भरे व्यवहार से दूसरों का मन जीत लेती है । सूसन की रक्षा के लिए लॉरेन्स द्वारा घायल हो जाती है । असाधारण प्रेम से सुखराम के व्यक्तित्व में परिवर्तन करती है । कजरी प्यारी से कई अधिक पानीदार और स्वाभिमानी है । सुखराम का साथ पाकर कजरी हर कठिनाइयों का सामना करती है । सुखराम से बातें करते वक्त चक्खन तथा डाकू खड़गसिंह से बातचीत, प्यारी की मुक्ति आदि प्रसंगो में कजरी की निड़रता, निर्भिकता दिखाई देती है । कजरी भी सुखराम को मन से चाहती है । अवसर मिलने पर उसके ठाकुरत्व पर व्यंग्य करती है । नटनी होना वह भाग्य समझती है । उसमें अपने जातीय संस्कार की छाप है ।

कजरी के मन में माँ बनने की कामना थी । वह गर्भवती होती है तथा बच्चे के बारे में अनेक सपने सजाती हैं लेकिन उसके यह सपने बीच में ही टूट जाते हैं । उसका गर्भपात हो जाता है और इसमें ही उसकी मृत्यु हो जाती है । कजरी का चरित्र सजीव एवं स्वाभाविक लगता है साथ-ही-साथ अविस्मरणीय भी है ।

3) चंदा

चंदा मेम सूसन की अनौरस बेटी है । सुखराम उसे अपनी लड़की मानकर उसका पालन करता है । चंदा ईसाई वंश की है लेकिन सुखराम के यहाँ पलने से वह करनट जाति की हो जाती है । चंदा की उम्र लगभग तेरह साल की है । नीली आँखे, सुनहरे बाल, लम्बी नाक, गोरा वर्ण, सचमुच वह अप्रतिम सुन्दरी है । चंदा आदर्श प्रेमिका है । वह नरेश को सच्चे दिल से चाहती है । किन्तु सामाजिक विषमता के कारण उसकी शादी नरेश से नहीं हो सकती । नरेश के माता-पिता उसे एक नटनी समझकर उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं । नरेश के पिताजी चंदा को अपने बेटे से अलग करने के लिए सुखराम को धमकाते है ।

विवशता के कारण सुखराम न चाहकर भी जबरदस्ती चंदा का विवाह नीलू करनट के किन्तु चंदा नीलू को मन से अपना पति स्वीकार नहीं करती, उससे दूर रहती है । सच्चे प्रेमियों को सामाजिक विषमता की जंजीर नहीं बान्ध सकती । ये समाज के सभी बन्धनों को तोड़ने की शक्ति रखते हैं । शादी के बाद चंदा मैके आती है और नरेश से मिलती रहती है । वह अपने पुराने प्रेमी को नहीं भूल सकती । नरेश उसे समझाता है कि अब वह परायी है, वह उसे अपना नहीं सकता । चंदा के मन पर गहरा आघात हो जाता है । वह नारी होकर समाज के नीति नियम, रस्म तोड़ने को तैयार है किन्तु नरेश पुरूष होकर भी इन बातों से डरता है । चंदा के समझ मे नहीं आता कि केवल नारी का नाता अन्य पुरूषों से जोड़ने से वह अपवित्र हो जाती है, पर पुरूष अपवित्र नहीं होता । चंदा नरेश से याचना करती है तथा अपनी पवित्रता सिद्ध करते हुए कहती है -- " पर मैं अब भी वैसी ही हूँ । मैंने उससे आज तक जब नाता नहीं जोड़ा तो मैं पराये की कैसी हुई ? " [37] चंदा अपने मन के खिलाफ तथा जबरदस्ती की गई शादी को शादी नहीं समझती । दुनिया की कोई भी शक्ति उसका नरेश के प्रति सच्चा प्यार, लगन से जुदा नहीं कर सकती । चंदा किसी भी कीमत पर अपने प्यार की कुर्बानी देने को तैयार नहीं होती । इसके बजाय वह आत्महत्या करना चाहती है । लेकिन चंदा यह भी जानती है कि नरेश उसके बिना जिन्दा नहीं रहेगा । इस कारण वह प्राणत्याग नहीं करती ।

चंदा को अपने जीवन के रहस्य का रहस्य का पता चलता है तब वह पागलों की तरह अपने आप को ठकुराइन समझकर अधूरे किले में घूम आती है । नरेश के प्रति उसका लगाव बढ़ता रहता है । सुखराम उसका दर्द सह नहीं पाता । मजबूर होकर वह चंदा की हत्या कर देता है । अन्त तक चंदा नरेश के प्रति एकनिष्ठ रहती है । प्रेम मार्ग में अनेक कठिनाइयों, बाधाओं का वह डटकर मुकाबला करती है । अन्याय, अत्याचारों को सह लेती है किन्तु किसी के दबाव में से अपने निर्णय से जरा भी विचलित नहीं होती । उसके प्यार में वेदना, पीड़ा है । सचमुच चंदा प्रेमदेवता की सच्ची उपासक है । प्रेमियों में चंदा एक मिसाल है । चंदा का अटूट प्यार सहारनीय है ।

4) धूपो

धूपो चमार जाति की एक पतिव्रता नारी है । असमय उसके पति की मृत्यु होने के कारण वह विधवा हो जाती है । परिवार की जिम्मेदारी का बोझ उसके कंधो पर आ जाता है । वह खेतों में काम करके अपने बच्चों का पालन-पोषण करती है । धूपो जवान, सुन्दर है फिर भी वह अत्यन्त संयमी है । पति की मौत के पश्चात् वह किसी अन्य पुरूष की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखती । धूपो निड़र और स्वाभिमानी है, वैधव्य के कारण उसके स्वभाव में तीखापन आ गया है । अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए तत्पर रहती है । वह किसी के सामने झुकती नहीं । गाँव के सब पुरूष उसके स्वभाव से परिचित थे इस लिए कोई भी उसे छेड़ने की हिम्मत नहीं करता । लेकिन गाँव के कुछ गुण्डो की उस पर बूरी नजर थी, ऐसे पुरूषों का यह स्वभाव ही होता है कि जिस नारी का कोई सहारा नहीं होता उसे वे चैन से जीने नहीं देते । धूपो की स्थिति ऐसे ही है । रूस्तमखाँ और बाँके उसकी जवानी का मजा लुटाना चाहते हैं । इस लिए वे कोशिश भी करते हैं । वे नाकामयाब रहते हैं । धूपो पिघलनेवाली नारी नहीं है । बाँके रूस्तमखाँ के कहने पर उसकी पिटाई करता है तब सुखराम उसकी रक्षा करता है और उसे अपनी बहन मानता है । बाँके अपना बदला लेना चाहता है ।

एक दिन संध्यासमय धूपो खेत से घर लौट रही थी । मौका पाकर उस समय बाँके दो ठाकुरों की सहायता से धूपो को जबरदस्ती पकड़ लेते हैं । धूपो अपने को छुड़ाने की कोशिश करती है । किन्तु तीनों पशुओं के सामने उसका प्रतिकार क्षीण होता है । तीनों अपनी हविश बुझाते है । इज्जत लूट जाने के बाद धूपो के मन में प्रतिशोध की आग भड़क उठती है । वह बाँके की बोटी-बोटी करने की कसम खाती है । अपनी इज्जत के लिए नारी अक्सर दबी रहती है मगर उसे लूटने पर वह चुप नहीं बैठती । नारी चाहे किसी भी जाति की हो उसे सबसे प्यारी चीज उसकी इज्जत होती है । धूपो भयानक रूप धारण करके गाँव में आती है तथा अपना सतित्व स्पष्ट करते हुए कहती है -- " कौन कहता है मैं पापिन हूँ ? मेरा क्या दोष है पंचो ? अपने आप

तो कुछ नही किया ? ... तो मैं सती ही होऊँगी । " [38] धूपो के इन शब्दों में नारी जाति की वेदना, पीड़ा है । न्याय की याचना है । वास्तव मे धूपो पवित्र है, उसकी मजबूरी का लाभ उठाकर उसके साथ बलात्कार किया जाता है । इसमें उसका कोई कुसूर नहीं फिर भी पुरूषप्रधान समाज उसे अपवित्र एवं दोषी मानता है । पाप पुरूष करता है उसकी सजा नारी को भुगतनी पड़ती है । समाज धूपो के साथ न्याय नहीं करता । बस्ती के लोग उसे ठुकराते हैं । असहाय धूपो अपनी पवित्रता स्पष्ट करने के लिए जालीम समाज के सामने आत्महत्या कर लेती है । निर्दोष धूपो ने अपने प्राणों के बलिदान से समाज के बन्धनों को भिगो दिया क्योंकि इस समाज ने उसे जीनेका अधिकार नहीं दिया ।

धूपो में सहनशीलता, धैर्य, निर्भीकता, साहस है । आज भी ऐसी पिछड़ी जातियाँ है, जिसमें विधवा पुर्नविवाह पाप समझा जाता है । इस जाति की नारियाँ अपने पर हुए अत्याचारों, अन्याय के प्रति न्याय माँगने न्यायालय के दरवाजे नहीं खटखटाती बल्कि खुद को समाप्त कर देती है । धूपो ऐसी नारियोंका प्रतिनिधित्व करती हैं ।

5) बेला

बेला सुखराम की माँ है । वह नटनी का व्यवसाय करती है । अपने बेटे को करनट समझती है, ठाकुर नहीं । इस बात को लेकर अपने पति के साथ झगड़ा भी करती है । पति होने के बावजूद भी वह सुखराम का असली पिता कौन है ? यह बता नहीं सकती । वह कहती है -- " तू इसका बेटा नहीं है, तू नट है क्योंकि मैं बता नहीं सकती कि तू किसका बेटा है, वैसे कोई नटनी नहीं बता सकती । " [39] बेला के इस कथन में नटनी की यथार्थ स्थिति उसकी मर्म वेदना झलकती है । बेला अपने पति तथा बच्चों के लिए पराये मर्दों के साथ रातें बिताती है ।

बेला में आत्मगौरव की भावना एवं पति का सम्मान है । पति को पुलिस की हिरासत से छुड़ाने के लिए दरोगा करीमखाँ के साथ अपने शरीर का सौदा करती है । पति के प्रेम

के खातिर हरनाम द्वारा दिए हुए धन, सुख-सुविधाओं को ठुकराती है । अपने पति से बढ़कर उसे कोई चीज ज्यादा अहमियत नहीं रखती । पति की प्रताड़ना वह सह लेती है । बेला झूठी आशाओं के सहारे जीना नहीं चाहती । सुखराम के पिता के बहकावे में आकर खुद को ठाकुर समझकर माँ की ममता को ठेंच पहुँचाता है । बेला इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती और आत्मसर्ग करती है ।

6) सौनो

सौनो इसीला करनट की पत्नी तथा प्यारी की माँ है । वह चाहती है कि उसकी बेटी उसकी तरह वेश्या न बने भविष्य में खानदानी औरत बनकर रहें । सुखराम को दामाद के रूप में पाकर वह खुश होती है । इसीला उसे समझाता है कि वह नट वंश की है । अतः वह नटनी का ही व्यवसाय करेगी । इस पर सौनो कहती है -- " क्या बात है बड़ी जातों की औरतों में जो इज्जत से रहती है । मेरी बेटी क्यों नहीं रह सकती । " [40] सौनो के इन शब्दों में एक माँ का अपने बेटी के प्रति स्नेह एवं उसके भविष्य के बारे में स्वाभाविक चिंता दिखाई देती है । प्यारी को लेकर इसीला और सौनो में विवाद होता है । किन्तु के सौनो के प्यारी के बारे में यह विचार ज्यादा देर तक नहीं रह पाते । एक पुलिस सिपाही प्यारी पर आशिक हो जाता है । उसे पाने के लिए सुखराम और इसीला की पीटाई करता है । बेला द्विविधा में पड़ जाती है । मन से न चाहकर भी वह प्यारी को पिता और पति की रक्षा के लिए तन का सौदा करने की सलाह देती है । प्यारी इन्कार करती है लेकिन सौनो उसे समझाते हुए कहती है -- " औरत का काम औरत का काम है । उसमें बूरा-भला क्या ? कौन नहीं करती ? नहीं तो मार-मार कर खाल उड़ा दरोगा ।... फिर कमेरा न रहेगा तो क्या करोगी ? " [41] सौनो के इस वक्तव्यों में नटनियों की विवशता दिखाई देती है । हर कोई नटनी अपने परिवार को सुखी रखने के लिए उसे शरीर विक्रय करना ही पड़ता है । अपने परिवार के प्रति कर्तव्य निभाते समय नटनी किसी काम में बुराई महसूस नहीं करती ।

इसीला की मृत्यु के पश्चात् सौनो अकेली हो जाती है । सुखराम से शरीर सुख चाहती है । किन्तु प्यारी उसकी प्रताड़ना करती है । सौनो अपनी बेटी और दामाद को छोड़कर

किसे के घर बस जाती है । सौनो स्वाभिमानी नारी है । दूसरों की कमाई पर जीना नहीं चाहती ।

7) सूसन

सूसन उन्नीस साल की युरोपियन युवती है । वह पश्चिमी संस्कृति के पली है । अपने पुरूष मित्रों के साथ क्लब जाना, नाचना, गाना, मौज-मस्ती करना उसे पसन्द है । अपने पिता सॉयर साहब के साथ वह हिन्दुस्थान पर राज करने के हेतु यहाँ आती है । दूसरो के प्रति उसके मन में अपार स्नेह एवं सहानुभूती है । उसके विचार मानवतावादी है । सूसन कोई जात-पात नहीं मानती । अपनी रक्षा करनेवाले करनट सुखराम और कजरी को वह नौकरी देती है । सूसन प्रखर बुद्धिवाली नारी है । सूसन हिन्दुस्थान को जानना और परखना चाहती है । इसलिए वह हिन्दुस्थानी और विलायती साहित्य पढ़ती है । उसे विदेश और भारत में बहुत तफावत दिखाई देती है । सूसन सोचती है हिंदुस्थान सभी तरह परिपूर्ण है, नगर यहाँ के लोग जाति-पाति, धर्म आदि के नाम पर आपस में लड़ते रहते हैं । इसका लाभ दूसरे लोग उठाते हैं । वह अपने पिता के विचार से सहमत नहीं होती । सूसन चाहती है कि अंग्रेज हिंदुस्थानियों का शोषण न करें । पर अंग्रेज साहब उसे समझाते है कि अपने देश के प्रति हमें वफादार रहना चाहिए । सूसन के अपने स्वतंत्र सोच-विचार हैं, किसी के दबाव में वह अपनी सोच बदलती नहीं ।

सूसन आधुनिक सोच-विचार की नारी है । उस पर पाश्चात्य संस्कार है । उसके बावजूद भी वह स्वच्छंद यौन-सम्बन्धों को निषिद्ध मानती है । लॉरेन्स उसका दोस्त है, इस नाते सूसन उसके साथ क्लब जाती है, शराब पीती है, नाचती-गाती है, उसके साथ घूमती है किन्तु शादी से पहले उसके साथ शरीर स म्बन्ध रखने से इन्कार करती है । लॉरेन्स का प्रणय निवेदन ठुकराते हुए सूसन कहती है -- " तुम समझे थे कि मैं कोई चरित्रहीन स्त्री हूँ । मैं क्रिश्चियन हूँ । मैं पवित्र हूँ । मैं वासना की कठपुतली नहीं हूँ । " [42] सूसन में नारी जाति का सम्मान तथा स्वाभिमान है । अपने स्त्रीत्व पर उसे स्वाभाविक गर्व है । सूसन जवान है, उसके मन में स्त्री-सुलभ भावनाएँ हैं फिर भी वह संयमी है । अपनी भावनाओं पर काबू रखती है । सूसन में

क्षमाशीलता है । इसी कारण लॉरेन्स की गलती के लिए वह मन से उसे क्षमा कर देती है । परन्तु लॉरेन्स उसका विश्वासघात करता है । लॉरेन्स सूसन के साथ जबरदस्ती करता है, वह अपनी रक्षा करने की कोशिश करती है लेकिन उस पशु के बल के सामने वह निर्बल होती है । सूसन में सहनशीलता, साहस एवं धैर्य है । इज्जत लूटने के बाद वह कुछ समय विचलित हो जाती है । मन से सोचती है कि जो कुछ हुआ इस के लिए वह कुसूरवार नहीं । लेकिन नारी होने के कारण उसे यातना और तड़पन का सामना करना ही पड़ेगा । निष्कलंक होकर अस आत्महत्या क्यों करे ? वह अपने पर हुए अन्याय का प्रतिशोध लेना चाहती है । लॉरेन्स की पीटाई करके उसे इंग्लंड भेजती है ।

सूसन गर्भवती बनती है । ऐसी स्थिति में कोई भी नारी खुश होती है क्योंकि यही नारी के नारीत्व की पूर्णतः है । सूसन जानती है कि नाजायज बच्चे को समाज स्वीकार नहीं करता । सूसन के मन में द्विविधा निर्माण होती है । लॉरेन्स के पाप का अंकुर उसके पेट में पल रहा है । लेकिन सूसन को उस पाप के प्रति लगाव हो जाता है । कोई भी नारी अपने पेट में पल रहे गर्भ से नफरत नहीं करती । सूसन को अपने सृजनता पर गर्व होता है । लेकिन समाज में ऐसे बच्चे को पालना बड़ा मुश्किल काम है । सूसन फैसला करती है कि वह बच्चा कजरी को देगी । किन्तु कजरी मर जाती है । सूसन एक सुन्दर बच्ची को जन्म देती है । उसे सुखराम को सौंपकर सूसन इंग्लंड लौट जाती है । वहाँ किसी अस्पताल में नर्स का काम करती है । आजीवन वह कुँवारी रहती है । सूसन इस समाज में माँ बनकर रहना चाहती है मगर समाज उसे ऐसी माँ बनने नहीं देगा इसलिए वह खुद को तड़पाकर मर जाती है ।

सूसन के चरित्र में दार्शनिकता, सहानुभूती, प्रतिशोध की भावना, माँ की ममता, नारी सुलभ भावनाएँ हैं । वह आदर्श नारी है । विदेशी होकर भारतीय नारी के गुण सूसन में कूट-कूट कर भरे हुए हैं ।

" मुर्दो का टीला " मे चित्रित नारी पात्र

मुर्दो का टीला ऐतिहासिक उपन्यास के नारी पात्र उस युग के विशिष्ट वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । प्रमुख नारी पात्र नीलूफर और हेका दासी वर्ग की हैं, वेणी राजनर्तकी है । गौण नारी पात्र में चंद्रा, राजकुमारी, वीणा, षोड़शी गणसदस्य की नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं ।

।) नीलूफर

नीलूफर मिश्री नायिका है । बचपन में उसे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा । नीलूफर को पता नहीं था कि वह किसकी बेटी है । असे माँ-बाप का प्यार नहीं मिल सका । जन्म से लेकर मृत्यु तक दर-दर की ठोकरे खाकर भटकती रहती है । बचपन में ही वह बिक चुकी थी और दासी बनी थी । यौवनावस्था में नंगी होकर बिक्री के लिए बाजार में खड़ी हुई जिसे महाश्रेष्ठि मणिबन्ध खरीदता है । एक सामान्य दासी होकर भी अपने अनुपम सौन्दर्य के कारण वह मणिबन्ध की क्रीतदासी बनती है तथा यौवन और आनिंदय सौन्दर्य के बल पर वह मणिबन्ध को अपनी ओर आकर्षित करती है । मोअन - जो - दड़ो में आकर श्रेष्ठि मणिबन्ध उसे अपनी स्वामिनी के रूप में स्वीकार करता है ।

श्रेष्ठि मणिबन्ध तथा उसके वैभव को पाकर नीलूफर अहंकार महसूस करती है । लेकिन उसका यह अहंकार ज्यादा दिनों तक नहीं रहता । स्वामी मणिबन्ध नीलूफर को छोड़कर नर्तकी वेणी पर आसक्त हो जाता है । उसे ठुकराकर वेणी को रख लेता है । मणिबन्ध के इस बर्ताव से नीलूफर तड़प उठती है उसमें स्त्रीसुलभ स्वाभिमान जाग जाता है । उसके स्त्रीत्व का अपमान होता है । नीलूफर को अपनी अवहेलना बर्दाश्त नहीं होती । वह अपने अपमान का बदला लेना चाहती है । मणिबन्ध के उपर अपना अधिकार जमाए रखने के लिए वह प्रयास करती है किन्तु वह असफल हो जाती है । नीलूफर मणिबन्ध के विरोध में विद्रोह करना चाहती है । इसके लिए प्रतिशोध की भावना नीलूफर गायक विल्लीभित्तुर की ओर आकृष्ट होती है । गायक विल्लिभित्तुर के व्यक्तित्व में उसे इन्सानियत दिखाई देती है । इसलिए वह गायक से प्रेम याचना करते हुए कहती

हैं..." मैं धन के लिए प्यार नहीं करती, मैं तुम्हें वैभव के लिए संगी नहीं चुनना चाहती हूँ । ... मैं तुम्हें चाहती हूँ । हम तुम दोनों ठुकराए हुए हैं । ... क्या हमें अपने जीवन को सुखी बनाने का अधिकार है ? ... चलो गायक हम तुम कहीं भाग चले । " [43] नीलूफर गायक को समझाती है मगर वह वेणी को भूलना नहीं चाहता ।

नीलूफर अपना जीवन तथा व्यक्तित्व का मूल्य जानती है । कुछ दिन स्वामिनी के अधिकार भोग कर गर्व महसूस करती है किन्तु वह अपना दास जीवन नहीं भूलती । मणिबन्ध ने उसे प्रेम से तथा दिल से नहीं जीता तो उसे खरीदा था । वह हेका से कहती है ... " हेका । -तेरे लिए तो मैं अब भी वही नीलूफर हूँ । मैं नहीं भूल सकती मैं एक गुलाम थी और आज भी गुलाम हूँ । " [44] नारी जाति की व्यथा को हीं सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण परिवार की नारी नहीं समझ सकती । उसके लिए अनुभूति आवश्यक है । जिसने दुःख, दर्द, अवहेलना, पीड़ा को सहा है ऐसी नारी यह व्यथा समझ सकती है । नीलूफर दासी होने के कारण नारी जाति की पीड़ा को पहचान सकती है । धनी पुरूष नारी को पशु की तरह उसका अंग-अंग टटोलकर खरीदता है । उसे अपनी कठपुतली बनाता है, जब चाहे उसे उपभोग लेता है । जरासी भूल के लिए कोडों से पीटा जाता है । उसकी स्वाधीनता छीन लेता है । इस घृणित कृत्य का दुःख, नीलूफर को होता है । उसने इस अत्याचारों को सहा है । हेका को वह दासत्व से मुक्त करना चाहती है । नीलूफर कहती है -- " पुरूष स्त्री का स्वामी होना चाहता है -- अपने धन और अधिकार से स्त्री को खरीद लेना चाहता है, जैसे हम कोई पशुमात्र है । हेका ! ... यदि मैं कुलीन स्त्री होती तो कभी भी स्त्री की असली वेदना और घोर अपमान का अनुभव नहीं कर पाती । " [45]

नीलूफर निर्भीक, अदम्य साहसी एवं सामर्थ्यवान नारी है । अपने जान की बाजी लगाकर वह दो बार गायक विल्लिभित्तुर के प्राणों की रक्षा करती है । नीलूफर में आत्मसम्मान की भावना है । वह हेका से कहती है -- " मैं अपने अपमान का बदला लूँगी । मैं अपने आप को मिट्टी में मिलने नहीं दूँगी । मैं जानती हूँ मैं इतनी निर्बल और मूर्ख नहीं हूँ । हेका मैं निरीह नहीं हूँ कि कोई मुझपर व्यर्थ ही दया किया करे । दया पशुओं पर की जाती है, मनुष्य पर नहीं ।

नीलूफर सबकुछ सह सकती है वह फिर से राह का कुत्ता नहीं होना चाहती । " [46] नीलूफर के इस कथन से स्पष्ट होता है कि उसे अपनी शक्ति पर पूरा भरोसा है । वह किसी के सामने झुकनेवाली नहीं है । नीलूफर दासी होकर भी उसे मनुष्य होने का एहसास है । जो मनुष्य है उसे अपने पर हुए जुल्म, अन्याय, अत्त्याचारों का मुकाबला करना आवश्यक है । नीलूफर अपना अपमान एवं आत्त्याचारों को बर्दाश्त नहीं कर सकती । जीवन की हार उसे पीड़ादायक और असहाय होती है । धन और सत्ता के बल पर नारी को **वासनापूर्ति** का साधन समझनेवाले कामुक मणिबन्ध का बदला लेना चाहती है । इसके लिए नीलूफर अपनी सारी शक्ति इकठ्ठा करके मणिबन्ध के खिलाफ विद्रोह करना चाहती है । अगर वह अपनी कोशिशों में असफल रही तो सब कुछ त्यागने को भी वह तैयार है । इसके लिए उसे पछतावा नहीं होगा । नीलूफर में अदम्य आत्मविश्वास है । अपना दृढ़निश्चय वह हेका के सामने प्रगट करती हैं -- " मणिबन्ध को मैं अपना दास बनाकर रखूँगी जैसे भयानयक चित्ते को महासम्राज्ञी पैरों के पास बिठाए रखती थी । -- नर्तकी को (वेणी) दूध की मख्खी की भाँति फेक दूँगी और यदि सबकुछ नहीं हो सकेगा तो यह नीलूफर भी योगियों की भाँति कुछ छोड़कर निकाल जाएगी । " [47]

नीलूफर के मन में वेणी के बारे में जो तिरस्कार है वह उसके प्रेमी गायक **बिल्लिभित्तुर के प्रेम में** परिवर्तित होता है । नीलूफर गायक को चाहती है क्योंकि गायक नारी का सम्मान करता है, उसके स्वातंत्र्य का समर्थक एवं दास प्रथा के खिलाफ है । उसके हृदय में मानवता है । स्त्री-पुरूष में भेदभाव नहीं करता । नीलूफर अपना विलासी जीवन तथा धन, ऐश्वर्य को छोड़कर गायक बिल्लिभित्तुर के पास आती है । गायक नीलूफर के व्यक्तित्व को अच्छी तरह पहचानता है, उसमें गायक को एक पीड़ित नारी दिखाई देती है, जिसमें वेदना है । गायक वेणी के पास नीलूफर की महानता स्पष्ट करता है । नीलूफर दासी है किन्तु उसमें नारी का हृदय है । " ... नीलूफर आकाश मे जगमगाता नक्षत्र है । मेरा गीत उसके पास लिए फूट सकता है । तुम लोगों के लिए मेरी जीभ पीछे लौट जाती है । तुम सब मृत्यु की मरीचिका हो । नीलूफर जीवन की ज्योति है । वह अपदार्थ अकिंचन हो । ... नीलूफर के हृदय में मनुष्य की वेदना है, वह कभी भी कलुषित नहीं होगी । वह दुःखो को जानती है । " [48]

नीलूफर में सच्चाई, वफादारी तथा जीवन के कटु सत्य को स्वीकार करने की क्षमता है । गायक को भ्रम होता है कि वह कुलीन नारी है किन्तु वह गायक के भ्रम को दूर कर देती है । नीलूफर अपने पूर्व जीवन में किसी अरब लड़के से प्यार करती थी यह बात बताते हुए जरा भी हिचकिचाती नहीं । गायक **विस्मित** हो जाता है । नीलूफर कहती है -- " हाँ हाँ चौको नहीं पागल । -- क्या तुम मुझे कुलीन स्त्री समझा करते थे । कुलीन स्त्री क्या तुम्हारे श्रेष्ठि के साथ बिना विवाह किए आ जाती[49]।" गायक विल्लिभित्तुर के सामने नग्नावस्था में पेश आने में शर्म महसूस नहीं करती । बचपन से उसे लाज क्या होती है इस बात का पता नहीं चलता । नीलूफर पर ना माता-पिता का संस्कार कर सके ना ही किसी ने उसे समझाया । ऐसा ही अंग प्रदर्शन करके वह समाज में आज तक जीवित है । समाज ने भी उसे इस रूप में चाहा है । वह गायक से कहती है -- " मैं तो मनुष्य नहीं हूँ । फिर लाज क्यों ? जो बाल्यकाल से सिखाया गया है वही तो किया है मैंने, मेरे न मा थी न पिता । जब कभी मुझे किसीने पसन्द किया है तब मुझे उसके सामने इसी रूप को लेकर अपना पथ बनाना पड़ा । अन्यथा है क्या मुझमें ? न धन, न कुल, न बंन्धु, न अधिकार । केवल एक मांस पिंड हूँ । संसार ने आज तक इसी का मोल दिया है । आज भी इसी का मूल्य मिलेगा । तुम शायद भूल गये हो कि यह जो तुम्हारे सामने एक शरीर है यह नीलूफर मणिबन्ध की प्रिया नहीं वही हाट बाजारों में बिकनेवाली एक दासी है । " [50] नीलूफर के इस कथन में दासी नारी जीवन का कटु एवं नग्न सत्य तथा महत्वपूर्ण यथार्थ छिपा हुआ है ।

नीलूफर के साथ कई तरह के अन्याय हुए हैं । जीवन में उसने दु:ख ही दु:ख सहे हैं । गहरी पीड़ा का अनुभव किया है । जिस के कारण वह खुद से घृणा करती है । विल्लिभित्तुर नीलूफर के नारीत्व का सम्मान करके उसकी रक्षा का दायित्व स्वीकार करता है । नीलूफर को वह निर्दोष एवं पवित्र मानता है । अपने प्रती विल्लिभित्तुर का यह बर्ताव एवं विश्वास देखकर नीलूफर उससे कोई बात छिपाना नहीं चाहती । बीतें दिनों को वह दर्दभरे शब्दों स्पष्ट करती है -- " मैं बाजारों में नंगी बिक चुकी हूँ । कितने पुरूषों ने मुझसे विलास किया है । स्वयं मुझे भी याद नहीं । विल्लिभित्तुर मैं अपने आप से घृणा करती हूँ । " [51] नीलूफर एक कठपुतली बनकर रही हैं । खुद को बिकने के लिए वह मजबूर है । जिसने भी इसे खरीदा उसने

उसके साथ पशु-सा व्यवहार किया । गायक उसके निर्भीक व्यथा पूर्ण निवेदन को सुनकर उसकी पीड़ा पर गीत बनाना चाहता है । किन्तु नीलूफर अपनी हैसियत की सीमा के बाहर नहीं जाना चाहती । क्योंकि वह संसार में हँसी का पात्र बनना नहीं चाहती । गायक को उस पर गीत बनाने से रोकने की कोशिश करती है । नीलूफर गायक की महानता स्पष्ट करते हुए कहती है -- " तुम मनुष्य नहीं हो । तुम अवश्य कोई देवता हो । किन्तु तुम मुझपर गीत न बनाना कभी । लोग सुनेंगे तो हँसेंगे । दासी पर भी कहीं गीत बनाए जाते हैं ? " [52]

नीलूफर दासत्व से मुक्ती पाने के लिए श्रेष्ठि मणिबन्ध का विलासपूर्ण प्रासाद त्याग कर निर्धन गायक के पास हमेशा - हमेशा के लिए आ जाती है । उसकी दृष्टि में अधिकार और धन की लालसा हानिकारक है, वह मनुष्य को विवशता की ओर ले जाती है तथा मनुष्य खुद उनका गुलाम बन जाता है । वह स्वाधीनता के महत्व को समझती है । नीलूफर प्रेम की गहराई एवं ऊँचाई को पहचानती है । " आज तक मैं समझती थी की किसी पुरूष को मात्र अपना पेट भर लेने के ही खोजती है । आज मुझे ज्ञात हुआ स्त्री पुरूष से स्नेह करती है, यह प्रकृति का नियम है अन्यथा क्या मैं आज कभी हारती " [53] नीलूफर एक स्वतंत्र नारी के रूप में दाम्पत्य जीवन बिताना चाहती है । अपने मन से वह गायक विल्लिभित्तूर को पति के रूप में स्वीकार करती है । इस के लिए विवाह जैसे बाहय संस्कारो को वह महत्व नहीं देती । बिना शादी के खुद को सुहागिन मानती है । वह पति की महत्ता को अच्छी तरह समझती है । गायक से सच्चा प्रेम पाकर वह स्वीकार करती है कि नारी के लिए संसार में पति के प्यार से बढ़कर कोई चीज नहीं हैं । किन्तु पति केवल अपने अधिकार से नारी का शोषण करनेवाला न हो । नीलूफर हेका से आदर्श पति के बारे में कहती है -- " ... किन्तु पति वह नहीं जो परम्परा बना दे, पति वह जो प्रेमी भी हो । और प्रेमी वह नहीं जो मस्ती में हो, वरन् विवशता जन्म हो, कठोरता में जिसकी अग्नि परीक्षा हुआ करे । " [54] **गायक के साथ रहकर नीलूफर** बहुत ही सन्तुष्ट है । उसका जीवन सफल हुआ है । अब उसे कोई चिन्ता नहीं है, ना ही दुनिया के उथल-पुथल का डर एवं गुलामी का अंकुश । मजेसे जिंदगी गुजारती है । गायक ही उसका संसार है । अपने सुखपूर्ण जीवन में वह खुश है । " अब भोर अपनी होती है । कहीं कोई हाहाकार नहीं । विवशताओं में भी हम

सुखी हैं । न दासत्व न स्वामित्व । न किसीसे कुछ माँगते हैं, न किसी को कुछ देते हैं । व्यापार, राज्य, अधिकार यह सब हाहाकार की जड़ है । प्रसिद्धी मनुष्य के शान्ति की सबसे बड़ी शत्रु है जो उसके हृदय की पूर्ण परितृप्ति आसक्ति और प्रेम में है, न कि दूसरों को अपने अधीन में । " [55]

दास ही दासता से मुक्ति का प्रयास कर सकता है इस लिए नीलूफर पुरूष वेश में दासों को संघटित कर उनके मन में चेतना जगाते हुए कहती है -- " अपने इस दासत्व को छोड़ दो । जहाँ तक हो शरीर के दास बनो न कि मन के भी । यदि तुम्हारी बुद्धि दास्यत्व में फँसी रहेगी तो कभी भी तुम्हारी मुक्ति नहीं होगी । " [56] इस कथन में नीलूफर के दासता से छुटकारा पाने के बारे में जो विचार हैं उसकी अभिव्यक्ति हुई है । दास और स्वामी में जो तफावत है उसे स्पष्ट करते हुए वह हेका से कहती है -- " स्वामी के इंगित पर मरने वाला दास मनुष्य नहीं कुत्ता है क्योंकि स्वामी और दास का एक ही स्वार्थ कभी भी नहीं हो सकता । " [57] नीलूफर खुद दास जीवन को भुगत चुकी है और मुक्ति पाने के लिए सबकुछ त्यागकर विद्रोह करती है । वह दासों को भी विद्रोह करने के लिए प्रेरित करती है ।

अपने बचपन के साथी हेका और अपाप के साथ मरते दम तक नीलूफर सच्ची दोस्ती का रिश्ता निभाती है । हेका और अपाप को कभी भी अलग नहीं होने देती । इस दुनिया की बुराई को उसने देखा है तथा उसके कारणों को भी जाना है । लोग ऐसे ही किसी को बुरा कहते हैं मगर वास्तव में सबसे बुरा तो पैसा और सत्ता की लालसा है । संसार को इस बुराई से बचाने के लिए वह उपाय भी बताती है । वह कहती है -- " न स्त्री बुरी होती है, न पुरूष । धन बुरी वस्तु है । अधिकार बुरी वस्तु है । धन और अधिकार को ठीक कर दो, फिर संसार में कुछ भी बुरा नहीं है । " [58] नीलूफर के इस कथन में युगसत्य तथा बहुत बड़ा तथ्य समाया हुआ है ।

दाम्पत्य जीवन के सुख के कारण नीलूफर के मन में स्वार्थ की भावना निर्माण होती है । विल्लिभित्तुर की वीरता को उसका स्नेह खींचना चाहता है । अपने इस सादगीभरे जीवन को वह त्यागना नहीं चाहती तथा विल्लिभित्तुर को किसी मुसीबत में डालना नहीं चाहती । नीलूफर

युद्ध से नफरत करती है, युद्ध को रोकने के लिए वह अपने प्रतिस्पर्धी वेणी के पास जाकर गायक के प्राणों की भीख माँगती है । वेणी के सामने सिर झुकाते हुए वह हिचकिचाती नहीं । वेणी की धूर्तता के कारण आमेन - रा की कटार द्वारा नीलूफर मारी जाती है । स्वतंत्रता के लिए उसका यह बलिदान अमर है ।

अपना आत्मगौरव, आदर्शों, मुक्ति के लिए नीलूफर संघर्ष एवं विद्रोह करती है । संघर्ष में ही उसका जीवन गुजर जाता है । उसमें तेज बुद्धि, सद्विवेक, क्रियाशीलता, मानवीयता, स्नेहभावना, स्वाभाविकता, संवेदना है । जीवन का यथार्थ एवं वास्तविकता को स्वीकार ने की शक्ति उसमें हैं । उसका अदम्य साहस, हिम्मत, सहारनीय है । दुःखों के थेपड़ो से कभी-कभी नीलूफर विचलित होकर आत्महत्या करने के लिए प्रवृत्त होती है लेकिन घोर आत्मविश्वास एवं प्रखर इच्छा शक्ति के बल पर कठिन परिस्थितियों का सामना करती है । सचमुच नीलूफर क्रान्तिकारी नारी है । उसका चरित्र महान है ।

2) हेका

हेका साधारण मिश्री दासी है । बचपन से वह माता-पिता के स्नेह से वंचित रही है । नौ-दस साल की उम्र में उसे एक बुढ्ढा फेरीवाला सहारा देता है किन्तु यहुदीयोंके युद्ध में उस का यह सहारा छूट जाता है, तब उसे अपाप मिलता है और दूसरे दिन नीलूफर से भेट हो जाती है । अपाप के पिता इन तीनों का पालन करते हैं । दुर्भाग्य से अपाप के पिता मर जाते हैं । तीनों वहाँ से भागकर नील के खेतों में काम करते हैं । उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । जरा-सी भूल के लिए उन्हें कोडों से पीटा जाता है । धीरे-धीरे अपाप और हेका जवान होने लगे और एक दूसरे की ओर आकर्षित हो गये । उसके पश्चात् उन्हें बाजारों में बेच दिया जाता है ।

श्रेष्ठि मणिबन्ध तीनों को खरीदता है । नीलूफर स्वामिनी बन जाती है और हेका उसकी दासी होती है । अपाप को फिरसे बेचा जाता है । हेका अपाप से जुदा होकर विव्हल हो जाती है । नीलूफर मणिबन्ध से कहकर अपाप को सदा के लिए वापस लाती है । अपाप को

पाकर हेका सन्तुष्ट हो जाती है । हेका संवेदनाशील, भावुक और समझदार नारी है । नीलूफर को दु:खी देखकर वह उसकी पीड़ा को जानना तथा उसके दु:खों को बाँटना अपना फर्ज समझती है । वह नीलूफर से कहती है -- " तुमने मेरे जीवन को स्वर्ग बना दिया है, क्या मैं तुम्हारे लिए कुछ कर सकती हूँ ? " [59] जब कभी नीलूफर आवेश में आकर उसे ' दासी ' कहकर बुलाती है, तब हेका के मन को चोटसी लगती है । लेकिन दासी होने के कारण वह नीलूफर के कटु शब्दों को सहती है । नीलूफर के उद्वेग को समझकर हेका उसे समय समय पर सचेत कर देती है । श्रेष्ठि मणिबन्ध का नर्तकी वेणी के प्रति बढ़ता लगाव देखकर हेका नीलूफर के भविष्य के बारे में चिंतित होती है ।

हेका पीड़ित नारी है । बाजारों में बिक चुकी है । उसे अपने शरीर भी अधिकार नहीं है । कोई भी उसके पास आ कर अपनी हविश बुझाता है । उसके पास उसका सुहाग होकर भी हेका एक स्वतंत्र नारी के रूप में दाम्पत्य जीवन व्यतीत नहीं कर सकती । क्योंकि दासों का वैवाहिक जीवन भोगने के लिए स्वातंत्र्य नहीं है । अपाप के सामने मणिबन्ध हेका से अपनी प्यास बुझाता है । अक्षय प्रधान बार-बार उसके साथ शरीर सम्बन्ध स्थापित करता है । मन से चाहकर भी हेका इसका विरोध नहीं कर सकती । क्योंकि दासों को शिकायत करने का अधिकार नहीं । कभी-कभी स्वादिष्ट भोजन प्राप्त करने के लिए भी वह अपना तन बेचती है । नीलूफर हेका की विवशता सह नहीं पाती, वह हेका पर चीढ़ जाती है तब हेका कहती है -- " तुम्हारा जीवन स्वर्ग है देवी । हम नरक के प्राणी है । " [60] हेका के इन शब्दों में गहरी वेदना । समायी हुई है ।

हेका अपने पति अपाप का सम्मान चाहती है । कोई उस पर अन्याय करें उसे बेवजह पीटे यह उसे बर्दाश्त नहीं होता । पति के रक्षा के लिए हेका अपना शरीर अन्य पुरूषों के हवाले करती है । इतना ही नहीं उसके लिए प्राणों की बाजी लगा सकती है । हेका घायल अपाप को देखकर क्रोधित हो जाती है -- " यह किसने किया पाप ? यह तेरा शरीर इतना घायल क्यों है ? किसने तेरे उपर यह घोर अत्याचार किया है ? यह तेरा शरीर इतना घायल क्यों है ? किसने तेरे उपर घोर अत्त्याचार किया है ? मैं उसका मुँह नोच लूँगी, बता मुझे मैं आज मृत्यु का सामना

करने को तैयार हूँ अपाप । " [61] हेका अपाप को अपने तन-मन से समर्पित होती है । अपाप पर कोई आँच आने नहीं देती । अपाप उसकी विवशता समझता है । उसके भ्रष्ट तन एवं पवित्र मन दोनों को दिल से चाहता है । हेका साहसी एवं चतुर नारी है । अपनी सखी नीलूफर की हर तरह की सहायता करने के लिए वह सदैव तत्पर रहती है । मणिबन्ध द्वारा ठुकराए जाने पर हेका नीलूफर को अपने कक्ष में सहारा देती है । मणिबन्ध के आदमीयों से नीलूफर को बचाने के लिए हिम्मत से काम लेती है । वह बड़ी चतुराई से किसी को कक्ष के अन्दर घुसने नहीं देती । कभी-कभी कई पुरूषों के साथ शरीर सम्बन्ध स्थापित करती है ताकि किसी को शक न हो जाए । उसके प्राणों की रक्षा के लिए हेका अपनी जान खतरों मे ड़ालती है । कई मुश्किलों का सामना करती है । अपनी जान से ज्यादा नीलूफर की जान हेका को मूल्यवान लगती है । वह नीलूफर से कहती है -- " तू अपनी चिन्ता कर । हमारा ध्यान रहने दे । हमारा क्या है ? आज है, कल नहीं । जीवन में यदि मृत्युपर एक एक भी सच्चा आँसू बहाने वाला मिल जाए तो समझ लो जीवन सफल हो गया । [62] इस कथन में नीलूफर के प्रति हेका का अटूट स्नेह स्पष्ट हो जाता है ।

हेका में धैर्य है । जीवन को अनुकूल बनाकर जीने की प्रबल इच्छा शक्ति है । मुसीबतों को देखकर हेका विचलित नहीं होती बल्कि ड़टकर उनका मुकाबला करती है । समाज के द्वारा सताये जाने पर भी अपने जीवन को नष्ट करने का विचार भी उसके मन को कभी छू नहीं सकता । नीलूफर को भी वह आत्महत्या करने से रोकते हुए कहती है -- " क्या आत्महत्या से तेरी व्यथा समाप्त हो जायेगी ? जब तक न्याय का दिन नहीं आयेगा तेरी आत्मा इसी घोर यातना में तड़पती हुई घूमा करेगी और समझी है दुष्ट आत्माएँ तुझे तंग नहीं करेगी ? -- मैं नहीं जानती वह सब किन्तु मैं तुझे मरने नहीं दूँगी, चाहे तू कुछ भी कहे । [63] हेका में सहनशीलता तथा विश्वास है ।

हेका में इन्सानियत है । जितनी वह शान्त रहती है इससे कई अधिक क्रोधित हो जाती है । अपने आत्मसम्मान का वह बार-बार हनन नहीं होने देती । अपनी इच्छा के खिलाफ किसी को अपने शरीर से खेलने नहीं देती । अक्षय प्रधान से यौन - सम्बन्ध रखने के लिए वह

विवश है । किन्तु उसके अंदर की नारी उस विवशता एवं शारीरिक शोषण को मिटाना चाहती है । अक्षय प्रधान के प्रणय निवेदन को हेका दृढ़तापूर्वक ठुकराती है, उसका मुँह नोच लेती है । जीवन के बारे में उसका **दृष्टिकोण** दार्शनिक है । हेका जीवन का अर्थ जानती है । -- " जिसकी मौत पर भी सबके होठोंपर घृणा ही दिखाई दे तो वह कितना धनी क्यों न हो, समझ लो वह मनुष्य बनकर पृथ्वीपर नहीं जिया । " 64

अपना अस्तित्व जीवन की सफलता तथा दासता से मुक्ति पाने के लिए हेका विद्रोह में गायक का साथ देती है । जब नीलूफर मोहवश युद्ध को रोकना चाहती है तब हेका उसकी प्रताड़ना करती है । उसके नारीत्व को धिक्कारती है, तथा उसे घृणा करने लगती है । नीलूफर का साथ देने से इन्कार करती है । निर्भय निर्बन्ध होकर हेका मणिबन्ध के आत्याचारों के खिलाफ संघर्ष करती है और इसी में ही उसकी मृत्यु हो जाती है ।

त्याग भावना, आत्मबलिदान, कर्तव्यनिष्ठा, दूसरों के प्रति सहानुभूति, प्रेम, पतिनिष्ठा, चातुर्य, समझदारी, साहस, धैर्य, विश्वास, दार्शनिकता, निर्भीकता आदि गुणों के कारण हेका का चरित्र अनुलनीय रहा है ।

3) वेणी

वेणी कीकट देश की राजनर्तकी तथा द्रविड़ी गायक विल्लिभित्तुर की प्रेयसी है । उपन्यास के प्रारंभ में वह स्वतंत्रता प्रेमी के रूप में हमारे सामने आती है । कीकट का अधिपति ज्योंकि प्रति मास नई नारी को अपने जाल में फँसाता है वह वेणी पर आसक्त हो जाता है । तथा उसके साथ शादी करना चाहता है । अत: अपने प्यार को अबाध रखने के लिए वेणी और गायक विल्लिभित्तुर मोअन - जो - दडो महानगर में सब कुछ त्यागकर भाग आते हैं । दोनों एक दूसरे के प्रति एकनिष्ठ है, उनका प्रेम वासनिक नहीं बल्कि आत्मिक है । विल्लिभित्तुर को पाकर वेणी

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

को जीवन तथा प्रेम का वरदान प्राप्त होता है । उदरनिर्वाह के लिए दोनों नृत्यगान करते हैं । अपने दरिद्रपूर्ण जीवन में वेणी विल्लिभित्तुर के साथ खुश रहती है ।

वेणी का नृत्य तथा अनुपम सौन्दर्य देखकर कामुक मणिबन्ध उसकी ओर आकर्षित हो जाता है । मणिबन्ध के शक्तिशाली व्यक्तित्व से वेणी प्रभावित होती है । अपने सच्चे प्रेमी को छोड़कर धन, वैभव, और अधिकार की लालसा से वेणी मणिबन्ध से प्रेम करने लगती है । जीवन के बारे में उसके विचार बदल जाते हैं । सुख-सुविधा, धन, ऐशो-आराम ही जीवन है ऐसा उसका मानना है । जीने के लिए यहीं चीजें आवश्यक है । वह कहती है -- " माना कि हमें बार-बार जन्म लेना है किन्तु जब तक जीवन है तब तक उसका हनन क्यों किया जाय ? " [65]

वेणी धूर्त, बेवफा, मदमस्त नारी है । श्रेष्ठि मणिबन्ध के बहकावे में आकर विलास, वैभव एवं सत्ता के कारण वह स्वामिनी बनकर अपने प्रेमी विल्लिभित्तुर को ठुकराती ही नहीं, बल्कि अपने मार्ग की मुसीबत हटाने के लिए वेणी उसकी हत्या करने की योजना बनाती है । किन्तु वेणी को इस कार्य में सफलता नहीं मिलती जिसके कारण वह तड़प उठती है । श्रेष्ठि मणिबन्ध की झूठी तारीफ एवं आश्वासनों को सच समझकर सम्राज्ञी बनने के सपने देखती है । नीलूफर गायक विल्लिभित्तुर तथा द्रविड देशवासियों की रक्षा के लिए वेणी को अपने देश के भाई-बहन एवं प्रेमी के प्रेम का वास्ता देकर उनके प्राणों की भीख माँगती है तथा नरसंहार को रूकवाना चाहती है । लेकिन वेणी सत्ता के अहंकार के कारण उसकी याचना को ठुकराकर उन्हे तुच्छ मानती है । मनुष्य की वेदना, पीड़ा, भूलकर वेणी संवेदनरहित हो जाती है । मणिबन्ध के दुष्कृत्यों का साथ देना चाहती है । वेणी को शराब की बुरी तरह लत लग जाती है इसलिए वह सदा नशे में झूमती रहती है ।

विलासी जीवन तथा मणिबन्ध के सम्पर्क मे रहने के कारण वेणी निष्ठुर एवं कठोर हृदया नारी बन जाती है । अपने देशवासियों का रक्तपात तथा अपनी बहनों के साथ दुष्ट आत्याचारों एवं प्रेमी गायक विल्लिभित्तुर की हत्या को देखकर उस पर कोई असर नहीं होता । लेकिन पाशविकता, उन्मत्ता, ज्यादा समय नहीं टीक पाती । गायक के क्रूर हत्या के पश्चात् वेणी की चेतना

तथा उसके अन्दर की नारी जाग जाती है । वेणी श्रेष्ठि मणिबन्ध का छल, कपट एवं उसकी असलियत को पहचानती है । मणिबन्ध आमेन - रा की कमी महसूस करता है तब वेणी क्रोधित होती है क्योंकि यदि आमेन - रा जीवित रहता तो आज वह कहीं की न रह जाती ताकि वह कुलीन नारी नहीं है । वेणी मणिबन्ध को व्यंग्य से कहती है -- " क्योंकि वेणी एक नाचने गाने वाली स्त्री है । साम्राज्य का वैभव चाहता है कि स्वर्ण के सिंहासन पर कोई उच्च वंश की कन्या बैठे अन्यथा सभ्रान्त राजकुलीन पदाधिकारी उसके सामने अपना सीर नहीं झुकायेंगे । उस समय क्या सम्राट अपना अपमान नहीं होगा ? उस समय सम्राट का हृदय नहीं देखा जाएगा । उनके अधिकार और स्वर्ण का मूल्य कुता जाएगा । -- तुम ने वेणी से विश्वासघात किया है । चन्द्रहास की षोड़शी कन्या से विवाह करोगे तुम ? और मैं देखती हूँ । " [66] वेणी के इस कथन में उसके मन की वेदना स्पष्ट होती है । समाज के ऊँच-नीचता, कुलीनता की दृष्टि के खोकलपन पर वेणी कड़ा व्यंग्य कसती है । जीवन का कठोर सत्य भी इस में छिपा हुआ है । कुलीन रक्त की न होने के कारण वेणी बड़े खानदान की बहु नहीं बन सकती । मणिबन्ध उसकी कुलीनता देखता है मगर उसके नारी हृदय को नहीं पहचानता जिसने उसे पाने के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया है यहाँ तक की अपने प्यार की कुर्बानी भी दी है ।

श्रेष्ठि मणिबन्ध की लोलुपता को बर्दाश्त नहीं करती । उससे ऊब जाती है तथा अपने कठोर बर्ताव पर पछतावा करती है । अन्त में वेणी गायक विल्लिभित्तुर की वीरता शौर्य की प्रशंसा एवं कदर करते हुए मणिबन्ध से कहती है -- " तुम हत्यारे हो । तुम नर के रूप में पिशाच्च हो । -- तुमने उसे मार डाला -- तुमने निष्ठुर दैत्य .. तुमने उसे मार डाला -- तुम कायर हो -- वह महावीर था -- वह नायक -- किन्तु संसार तुमसे घृणा करता है नारकीय पशु । पशु । " [67] वेणी मणिबन्ध के पुरूषार्थ को धिक्कारती है ।

अधिकार की लालसा से वेणी का व्यक्तित्व कायर एवं उन्मत्त बन जाता है । कुछ दिनों पश्चात् वह ऐशो-आराम की जिन्दगी से घृणा करने लगती है । अपनी वास्तविकता को पहचानती है तथा श्रेष्ठि मणिबन्ध की प्रताड़ना कर के भाग जाती है । गायक विल्लिभित्तुर से उसे

सात्विक प्रेम मिलता है । लेकिन मणिबन्ध के प्रेम में वासना एवं सुख-सुविधाओं के अलावा कुछ नहीं मिलता जो क्षणिक है । कुछ समय के लिए वेणी अपनी राह भूलती है । लेकिन फिर से वेणी के हृदय में गायक विल्लिभित्तुर का प्रेम स्थान पाता है । वेणी सदा के लिए मणिबन्ध से घृणा, नफरत करके चली जाती है । अन्त में उसके व्यक्तित्व में हुए परिवर्तनों के कारण उसका चरित्र पाठकों को के मन पर गहरा प्रभाव डालता है ।

4) चन्द्रा

चन्द्रा किकट देश की राजकुमारी है । चन्द्रा के पिता **कीकटाधिपति** का अनेक स्त्रियों के साथ अनैतिक सम्बन्ध है । तथा उसकी कई पत्नियाँ है । वह जनता के साथ पशु का सा व्यवहार करता है । सदा ही विषय-वासना में लिप्त रहता है । चन्द्रा अपने पिता के बर्ताव से असन्तुष्ट रहती है लेकिन उसका विरोध नहीं कर सकती । **कीकट** की सुरक्षा के प्रति अधिपति सतर्क नहीं होता इस कारण उत्तर के बर्बर आर्य उन पर हमला करता है । नगरवासियों पर घोर आत्याचार करते हैं । स्त्रियों की इज्जत को लूटा जाता है । स्वयं अधिपति उनका दासत्व स्वीकार करता है । चन्द्रा की माँ एवं बहिन दासी बन जाती है । किन्तु चन्द्रा दासत्व को स्वीकार नहीं करती ।

चन्द्रा में आत्मसम्मान तथा देशप्रेमी कूट-कूट भरा हुआ है । वह साहसी, निर्भीक, सहनशील नारी है । अत्त्याचारों से पीड़ित भूखे-प्यासे देशवासियों की रक्षा के लिए तथा प्रतिशोध की भावना से चन्द्रा मोअन - जो - दड़ो महानगर में यह सोचकर आती है कि यहाँ के महाश्रेष्ठि उन्हें सहायता करें एवं प्रतिशोध में उनका साथ दे । महाभाई के उत्सव के लिए मोअन - जो - दड़ो के नागरिक, श्रेष्ठिगण इकठ्ठा हो जाते हैं । चन्द्रा जनसमुदाय में आकर अपने दर्दभरी कहानी सुनाती है । **कीकट** देश में जो घटित हुआ है उसका बयान कर के मदद की याचना करती है । लेकिन मोअन - जो - दड़ो के नागरिक एवं श्रेष्ठिगण चन्द्रा के दयनीय आवस्था पर जोर-जोर से हँसने लगते हैं ।

राजकुमारी होकर चन्द्रा को परिस्थितिवश रास्ते की भिखारी बनना पड़ता है । मोअन - जो - दड़ो के नागरिक चन्द्रा की नि:साहयता एवं कमजोरी का लाभ उठाते हैं । भूख मिटाने के लिए उसे अपना तन बेचना पड़ता है । ऐसे जीवन से वह घृणा करने लगती है । एक दिन चन्द्रा गायक विल्लिभित्तुर और नीलूफर के घर पहुँचती है । दोनों के साथ रहने से चन्द्रा की चेतना जागे जाती है ।

चन्द्रा सहृदय, आत्मविश्वासू, क्रान्तिकारी, अन्याय का विरोध करनेवाली तथा जीवन से हार न माननेवाली नारी है । आत्याचारियों से बदला लेने के लिए वह गायक विल्लिभित्तुर से मिलकर विद्रोह करती है । इस विद्रोह में गायक पराजित हो जाता है । उसका मन विचलित होने लगता है । उस पर हुए हमले के कारण वह वेदना से कराह उठता है तब चन्द्रा उसका हौसला बढ़ाते हुए कहती है -- " डरो नहीं । कन्धे का घाव है पूर जाएगा । -- तुम सारे संसार के शरीर से अपमान का बाण निकालकर फेकने के लिए उठे थे कवि ! क्या यह धातु उससे भी अधिक पीड़ा दे रही है ? " [68] चन्द्रा के विचार दार्शनिक एवं मानवतावादी है, जनकल्याण के लिए वह अन्त तक डटकर मुकाबला करती है । हार में भी चन्द्रा अपनी जीत मान लेती है । क्योंकि वह किसी के सामने सिर नहीं झुकाती । जीवन का कठोर सत्य वह स्वीकार करती है कि जीवन में सुख की उम्र बहुत छोटी होती है किन्तु दु:ख ज़ादा है इस लिए वह उस दु:ख वेदना को त्यागना नहीं चाहती बल्कि उसे जीवन के साथ जोड़ना चाहती है । चंद्रा गायक के साथ अपना घर बसाना चाहती है किन्तु दुर्भाग्य से मणिबन्ध के सैनिकों द्वारा मारी जाती है ।

5) वीणा

वीणा धनकुबेर पिता की बेटी तथा धन वैभव से सम्पन्न एक सफल प्रसिद्ध व्यापारी की पत्नी है । उसकाका दूर दूर के देशों में व्यापार चलता है । जन्म से ही अत्यंत रईस होने के कारण वीणा को अपने पति एवं उसके वैभव के बारे में ज्यादा कौतुहल नहीं है । उसकी आँखे लम्बी तथा शरीर गदबदा-सा है । अपार धन सम्पत्ति होने के कारण वीणापर मादकता छा जाती है ।

इस लिए उसमें सोचने की शक्ति नहीं रहती । सभ्य तथा उच्च समाज में उसका चहल-पहल रहता है । सुबह से संध्या तक ऐसे ही लोगों में वह अपना समय बीताती है ।

श्रेष्ठि एवं आदर्श नागरिक की पत्नी होने के कारण उसकी वाणी एवं बोलचाल विशेष अहमियत रखती है । वैसे तो वीणा नृत्य और संगीत के बारे में कुछ नहीं जानती लेकिन वह हमेशा बड़े चाव से नृत्य - संगीत देखने को जाती है । वीणा कुलीन नारी होकर पति एवं खानदान का सम्मान भूलकर उत्सव में शराब की नशे में मदमस्त रहती है । वह विलासी नारी बन जाती है ।

वीणा गणपरिषद की सदस्य है । मोअन - जो - दड़ो के नागरिक मणिबन्ध के दास बन जाए वीणा इस बात की विरोध करती है । वह चाहती है गणसदस्य मणिबन्ध से सन्धि न करे । वीणा के विचार से नागरिकों का असली सुख उनकी स्वतंत्रता में है । अतः इसके लिए युद्ध करना चाहिए चाहे कितनी भी अपत्तियों का सामना करना पड़े । अपनी सम्पत्ति वीणा स्वाधीनता प्राप्ति के लिए लूटाना चाहती है । परन्तु गणसदस्य उसके विचारों को स्वीकार नहीं करते । वीणा के मन में सच्चा देशप्रेम एवं स्वाभिमान है ।

6) षोड़शी

षोड़शी गणसदस्य चंद्रहास की एकलौती बेटी है । महानगर की नीति, परम्परा के अनुसार गणसदस्य उस पर सन्धि प्रस्तावना पत्र श्रेष्ठि मणिबन्ध तक पहुँचाने का काम सौपते हैं । षोड़शी अपने कर्तव्य का पालन करती है । षोड़शी निर्भीक और साहसी लड़की है । आमेन - रा के सैनिक उसे पकड़ते है तब वह कहती है -- " देव । हम बन्दी हैं या दूत ? " [69]

उम्र में छोटी होकर भी षोड़शी राजनैतिक नीति नियमों को अच्छी तरह जानती है । कुलीन होने के कारण आमेन - रा उसे श्रेष्ठि मणिबन्ध की पत्नी बनाना चाहता है । इसलिए षोड़शी को बंदी बनाया जाता है । अन्त में श्रेष्ठि मणिबन्ध की आज्ञा के अनुसार उसका वध किया जाता है ।

आ) आलोच्य उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन की समस्याएँ

प्रस्ताविका

समाज निर्माण और विकास के दो अन्योन्याश्रित तथ्य स्त्री और पुरूष है । दोनों का समाज संचलन में अपना - अपना महत्व रहा है । भारत के प्राचीन ग्रंथो में नारी को देवी रूप से सम्मानित किया है ।

" यत्र नार्यस्तु पूज्यत्ये रमन्ते तत्र देवतः । "

अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं । जगत् गुरू शंकराचार्य ने कहा है -- " जगन्नामाता जगत गुरू " अर्थात नारी आदि शक्ति का रूप है । भारतीय संस्कृति में ' मातृ देवो भव " " पितृ देवो भव " " आचार्य देवो भव " के अनुसार पिता और गुरू से पहले माता का स्थान निश्चित किया गया है । प्राचीन काल में आज तक नारी की महत्ता कई वचनों से गाई गयी है । फिर भी व्यवहार में नारी की उपेक्षा ही होती है ।

भारत का इतिहास गवाह है कि प्रागैतिहासिक काल में ' मातृसत्ताक ' पद्धति थी जिसके कारण नारी स्वतंत्र थी । उसे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक अधिकार थे । वैदिक युग में लड़कियों का विवाह सत्रह - अठारह की उम्र के पश्चात् ही किया जाता था । उस युग में लड़कियाँ स्वयंवर की प्रथा से अपने पति का चुनाव करती थी । डॉ. आ. ह. साळुंखे के मतानुसार --
" मातृसत्ताक पद्धति में नारी स्वतंत्र थी जिसका प्रचलन भारतीय समाज व्यवस्था में दिखाई देता है । " 70

मध्यकालीन भारत में नारी के **स्थिति** में गिरावट का आरम्भ हुआ । पुरूष प्रधान संस्कृति में नारी को गौण स्थान दिया गया । अपने अधिकार के बल से पुरूषों ने नैतिकता के सभी बन्धन पर डाल दिये और समाज धारणा के नियम अपने हित में बनाए । सेक्स की नैतिकता देश और

विदेश की नारी में एक पक्षीय रही है । वह नीति नियम नारी के लिए दमनकारी है । नारी को केवल भोगवस्तु माना । नारी को घर की चार **दीवारों** में तथा अनेक सामाजिक बन्धनों में जकड़ दिया जिससे उसका स्वतंत्र अस्तित्व समाप्त हो गया । वह युगों - युगों से अपने आत्मोद्धार की बात ही न सोच सकी । पुरूष नारी का शोषक बनकर रहा । खुद अनिर्बन्ध रहा । डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार -- " पुरूष नि:संग है, स्त्री आसक्त । पुरूष निर्द्वन्द है, स्त्री द्वन्द्वोन्मुखी । पुरूष मुक्त है, स्त्री बद्ध । " [71] नारी एक कठपुतली है जिसे बचपन में पिता की ऊँगली पकड़कर चलना पड़ता है, यौवन में पति की और बुढ़ापे में पुत्र की । मानव समाज की सृष्टि के विकास में नारी का उत्तरदायित्व विविध रूपी होकर भी उसकी ओर देखने का पुरूषों का दृष्टिकोण सदोष एवं स्वार्थी रहा है । " नारी को भोग्या एवं वस्तु मानने का सामन्तीभाव समाप्त नहीं हुआ, यही नारी के दैहिक शोषण का कारण है । " [72]

स्वतंत्रता संग्राम में नारी का सहयोग आवश्यक मानकर नारी शिक्षा पर बल दिया गया । भारत में स्थापित ब्रिटिश राज्य का प्रभाव पाश्च्यात्य, उदारवादी विचार आदि के कारण समाज सुधारक जैसे - स्वामी दयानंद, महर्षि कर्वे, पंडिता रमाबाई, राजा राममोहनराय, महात्मा गांधी, महात्मा फुले, ईश्वरचंद्र विद्यासागर आदि का ध्यान नारी की शिक्षा एवं सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन की ओर गया । सन 1860 का बालविवाह प्रतिबंध अधिनियम, सन 1956 का हिंदू कोड बिल आदि कानून बनाकर नारी को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्रों में समानाधिकार की घोषणा की । इससे नारी में जरूर कुछ परिवर्तन हुआ है । किन्तु इतना होकर आज भी भारतीय नारी सही हालत में स्वतंत्र नहीं है । भारत की नारी चाहे शिक्षित, अशिक्षित, ग्रामीण, नागरी हो, आज भी सामाजिक दृष्टी से पिछड़ी हुई तथा अपने हक्कों के प्रति जागृत नहीं है । नारी पुरूष की समर्पिता बनकर तथा उसके संरक्षण में जीवन - यापन करना हितकारक मानती है ।

बीसवी शती में शिक्षा प्रसार बढ़ने लगा । सामाजिक परिवेश बदलने लगा । नारी का आत्मसम्मान जागृत हो गया है । इस बात का असर साहित्य पर हो रहा है । अब साहित्य में नारी को व्यक्तित्व मिलता जा रहा है । वह अपनी **स्थिति** के प्रति विद्रोही बनती जा रही है ।

आज नारी अपने इच्छित ध्येय के लिए अपना सामर्थ्य पहचानकर संघर्षरत है । " आधुनिक नारियाँ महत्वाकांक्षी है । वह प्रतिशोध ले रही है और उनका लक्ष्य बिन्दु है पुरूष समाज । नारी समुदाय के पिछड़ेपन का कारण पुरूष वर्ग रहा है । इसे ही सत्य मानकर नारियाँ पुरूषों से प्रतिशोध ले रही है । " [73] नारी को पुरूष की दासी, भोग विलास की वस्तु तथा निजी सम्पत्ति बनकर रहना मंजूर नहीं है । नारी अबला नहीं है । किन्तु ग्रामीण नारी अब भी पीसती जा रही है । ग्रामीण समाज की सामन्तवादी धारणाओं में परिवर्तन नही हुए हैं । उन पर प्रथा, रूढ़ि धर्म आदि का गहरा प्रभाव है । आशाराणी व्होरा के अनुसार -- " संवैधानिक स्वतंत्रता और समानता के बावजूद यह आजादी यह सम्मान केवल मुट्टीभर महिलाओं के लिए है । सामान्य नारी आज भी उतनी ही पिछड़ी व घटी हुई है और उतनी ही असुरक्षित है । " [74]

आज नारी का अबला रूप ही अधिक मात्रा में उभर उठा है । युगों-युगों से वासनातृप्ति का साधन बनकर जीवन व्यतीत करनेवाली एवं अन्याय-आत्त्याचार का शिकार बनी हुई नारी पीड़ित, लाचार, अपमानित एवं बेबस जिन्दगी जी रही है । सामाजिक कुप्रथाएँ अशिक्षा, आर्थिकता का अभाव, बाहयशक्तियों का आक्रमण, धर्म का बुरा प्रभाव आदि कई कारणों से नारी का जीवन समस्यामय बना हुआ है । आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक समस्याओं से **घिरा हुआ नारी का जीवन** चित्रण उपन्यासकारों ने किया है । नारी की शारीरिक कमजोरी के कारण उसके साथ बलात्कार किया जाता है । कभी-कभी आर्थिक जरूरतों का लाभ उठाकर नारी को जलील किया जाता है । पुरूष प्रधान समाज नारी को ही दोषी ठहराता है । सहृदय भावुक नारी सभी तरह के बन्धनों को अपना कर्तव्य मानकर प्रसन्नता से बन्धनों को स्वीकार करती है । परिणामतः यही बन्धन नारी के शोषण के आयाम बनकर उसके जीवन में समस्याएँ निर्माण करते हैं । कई नारियाँ अपने परिवार में स्वच्छंद आजाद है। किन्तु परिवार के बाहर पुलिस ठाकुर, जमीदारों आदि द्वारा उनका शोषण हो रहा है ।

प्राचीन काल में आज तक मानव जीवन अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है । पहले मानव जीवन इतना जटिल न था । इसकी जरूरतें भी सीमित थी । परिणाम स्वरूप समस्याएँ भी सीमित थी । परिस्थितियों के परिवर्तनों के साथ-साथ मानव के सामने कई नई समस्याएँ आ रही हैं । सामान्य मुनष्य को समस्याएँ उलझाती है लेकिन वह उन्हें अपने तक सीमित रखता है । किन्तु

साहित्यकार अपने उलझनों को साहित्य के माध्यम से सजीवरूप देता है । मानव जीवन में समस्याओं का निर्माण होना चेतना का प्रतीक है । मनुष्य जब विकास की ओर बढ़ता है तब उसके जीवन में समस्याओं का निर्माण होता है । जो मनुष्य समस्याओं को सुलझाता है उसका जीवन सफलतापूर्वक गुजर जाता है। अतः मानव जीवन और समस्याओं का परस्परपूरक सम्बन्ध रहा है । सामाजिक कुप्रथाएँ एवं विविध समस्याओं के कारण नारी की स्थिति हीन हो रही है । नारी के जन्म को ही अप्रिय बना दिया । भारतीय नारी को भारतीय समाज व्यवस्था में बन्दिस्त बना दिया है ।

डॉ. रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यास " कब तक पुकारूँ " और " मुर्दो का टीला " में राघवजी ने निम्न वर्ग के नारी पात्रों का यथार्थ चित्रण किया है । इन नारियों के जीवन की अने समस्याओं को उजागर किया है । जीवन - यापन करते समय इस समस्याओं का उन्हें सानना करना पड़ता है जैसे.. बहु विवाह, अनमेल विवाह, सौतियाँ डाह, विधवा, दास्यत्व, बलात्कार, रखैल, कुमारी माता, दैहिक विक्रय, सामाजिक कुरीतियाँ, ' पति-पत्नी का रिशा ', आत्महत्या, आर्थिक आदि अनेक समस्याओं ने इन नारियों के जीवन को घेर लिया है ।

।) बहु विवाह की समस्या

वंशवृद्धि, समाज संगठन, नैतिक सम्बन्धों के लिए विवाह प्रथा का महत्वपूर्ण स्थान है । विवाह प्रथा सामाजिक कर्तव्य है । इससे मुँह नहीं मोड़ा जाता । प्रत्येक देश के अपने आचार-विचार, परम्पराएँ होती हैं । उन्हीं के अनुसार लोग विवाह के सम्बन्ध में सोचते हैं । विवाह के कई प्रकार है । बहु विवाह ऐसा प्रकार है जिसमें एक पुरूष कई स्त्रियों से विवाह करता है । किसी पुरूष की एक पत्नी जीवित होकर भी अन्य स्त्रियों के साथ विवाह करना बहु विवाह है । प्राचीन काल में बहुपत्नी प्रथा प्रचलित रही है । प्राचीन काल में राजा महाराजा, जमींदार, ठाकुर, सामन्त आदि की अनेक पत्नियाँ हुआ करती थी । बहुपत्नी विवाह नारी का शोषण का एक आयाम बन गया है । सन ।872 अधिनियमम के अनुसार बहुपत्नी विवाह अवैध ठहराया गया । सन ।955 में ' हिंदू मैरिज ॲक्ट ' अधिनियम बनाकर बहुपत्नी विवाह पर प्रतिबन्ध लयाया है । लेकिन आज भी काम - पूर्ति एवं वंशवृद्धि के लिए बहुपत्नी विवाह हो रहे हैं ।

बहु विवाह प्रथा के कारण परिवार में जो आपसी आदर, प्रेम, ममता, स्नेह, शान्ति होती है वह नष्ट होती है जिसके कारण परिवार में दरारें पैदा होती है । परिवार में नारी की आपसी **जलन** एवं संघर्ष बढ़ता है । नारी का मानसिक असन्तोष बढ़ने लगता है । परिणामस्वरूप पारिवारीक विघटन होता है । नारी भी मानव होती है, आम मनुष्य की तरह उसे सफलतापूर्वक जीवन जीने का अधिकार है, उसका स्वतंत्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व है । इस बात को अनदेखा करके नारी को भोग्य वस्तू, श्रम तथा बच्चे पैदा करने का यंत्र समझा जाता है । नारी से अधिक से अधिक श्रम तथा बच्चे पाने की लालसा ने उसे विवाह बन्धन में जकड़ा है । इन सभी कारणों से समाज में बहुविवाह प्रथा का प्रचलन बढ़ता जा रहा है ।

' कब तक पुकारूँ ' में प्यारी रूस्तमखाँ की रखैल बनने के पश्चात् सुखराम अकेला हो जाता है । अपने अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए वह कजरी के साथ दूसरी शादी करता है । प्यारी कजरी को सौत के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहती । कजरी भी प्यारी को सौत के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहती । दोनों का आपसी संघर्ष चलता है । जिसके कारण सुखराम अपने मन की शान्ति खो देता है । वह किसी का दिल नहीं दुखाता । हालात ही कुछ ऐसे हो जाते हैं कि कजरी और प्यारी आपसी जलन, तिरस्कार की भावना भूलकर अपने पति सुखराम की भलाई के लिए मिलकर दुश्मनों से बदला लेती हैं ।

चंदन मेहेतर का पाँच बार विवाह हआ है । साठ साल की उम्र में उसने पाँचवी बार शादी की । पाँच **बीबियो** के बच्चें हैं । उसकी **बीबियाँ** दिन भर काम करती हैं । उनके बच्चें भी माताओं के साथ काम करते हैं । चंदन घर बैठकर आराम से जिन्दगी गुजारता है । अगर उसकी **बीबियाँ** ठीक तरह से काम नहीं करती तो वह उन्हें भला-बुरा कहता है, गालियाँ देता है । उसकी पत्नियों में झगड़ा हो जाता तो चंदन कभी बड़ी **बीबि** का पक्ष लेता है तो कभी छोटी **बीबि** का । बीच के **बीबियाँ** ज्यादा महत्व नहीं देता । धन कमाने के लिए पत्नियों को वेश्या व्यवसाय करने के लिए वह मजबूर करता है । चन्दन अपनी **बीबियों** का मानसिक एवं शारीरिक शोषण करता है किन्तु उसकी सभी **बीबियाँ** उसकी इज्जत करती हैं ।

' मुर्दो का टीला ' में कीकटाधिपति अपनी वासनापूर्ति के लिए कई बार विवाह करता है । नारी को नार्जीव वस्तु समझकर उसके साथ खेलता है । लेकिन नारी के मन की वेदना को नहीं समझता । उसकी पत्नियाँ मन-ही-मन तड़पती रहती हैं ।

2) अनमेल विवाह की समस्या

अनमेल विवाह प्रथा नारी के वैवाहिक जीवन के लिए बहुत ही हानिकारक है । पुरूष प्रधान समाज में नारी के विवाह के बारे में उसकी भावनाएँ, इच्छा, अनिच्छाओं को अनदेखा किया जाता है । माता-पिता एवं परिवार के लोगों की इच्छा के अनुसार उसे विवाह के बन्धनों में जकड़ा जाता है । सीधी-साधी लड़की को किसी अपात्र व्यक्ति के गले में बाँध दिया जाता है । अनमेल विवाह में पति-पत्नी की अलग - अलग इच्छाएँ होती है, वैचारिक दूरियाँ होती है इस कारण दोनों एक दूसरे को समझ नहीं पाते । परिणामतः दोनों में आपसी संघर्ष, अविश्वास, टकराव एवं द्वेष की भावना बढ़ने लगती है । समाज की नजरों में नारी सुहागन बनी रहती है लेकिन उसका जीवन तो अंधकारमय एवं पीड़ादायी बनता है । विवाह का बन्धन उसे अखरने लगता है । कभी-कभी नारी समाज के इस बन्धन से उब्ब जाती है और बन्धन को तोड़ने को विवश हो जाती है तथा गलत रास्ता अपनाकर कुकर्म करती है । किन्तु समाज नारी को ही कलंकिनी, भ्रष्टाचारिनी एवं चरित्रहीन कहकर उसकी भर्त्सना करता है ।

' कब तक पुकारूँ ' में कजरी का विवाह निर्बल कुर्री के साथ हो जाता है । कजरी अपने पति को पसन्द नहीं करती तथा उसके साथ सुखी नहीं रह सकती । इसलिए दोनों में हमेशा झगड़े होते रहते हैं । अपनी मानसिक एवं शारीरिक तृप्ति के लिए कजरी सुखराम की ओर आकर्षित हो जाती है । अपने पति कुर्री को छोड़कर सुखराम के साथ शादी करती है । सुखराम सूसन की लड़की चंदा की शादी उसकी इच्छा के खिलाफ समाज के डर से तथा चंदा की सुरक्षा के लिए नीलू करनट से कर देता है । चंदा दुल्हन तो बन जाती है मगर नीलू को अपने पति के रूप में स्वीकार नहीं करती । वह ससुराल से भाग आती है और अपने पुराने प्रेमी नरेश से मिलती रहती

है । चंदा नरेश की होकर रहना चाहती है किन्तु नरेश पुराने रीति-रीवाज, परम्पराओं को तोड़ना नहीं चाहता । वह उसे अपनाने से इन्कार कर देता है । फिर भी चंदा अपने पति के घर वापस नहीं जाती । नरेश के माता-पिता चंदा को ही धिक्कारते हैं ।

' मुर्दो का टीला ' में श्रेष्ठि मणिबन्ध के साम्राज्य के लिए कुलीन उत्तराधिकारी पाने के हेतु महामंत्री आमेन - रा गणसदस्य की पुत्री षोड़शी का विवाह उसकी मर्जी के खिलाफ मणिबन्ध से करना चाहता है । इसलिए षोड़शी को बंदी बनाया जाता है । अनिच्छा से षोड़शी विवाह के लिये तैयार होती है । लेकिन महासम्राज्ञी बनने से पहले उसकी हत्या की जाती है ।

3) सौतियाँ डाह की समस्या

बहुविवाह प्रथा से प्रचलन से नारी को पत्नी के रिश्ते के साथ-साथ सौत का रिश्ता भी निभाना पड़ता है । प्राचीन काल में नारी की अनेक सौतियाँ होती थी । नारी सबकुछ बर्दाश्त कर सकती है लेकिन सौत को बर्दाश्त नहीं कर सकती । किन्तु पुरूष प्रधान संस्कृति में उसे मजबूरी से सौत का स्वीकार करना पड़ता है । सौतियों में होड़ बनी रहती है । पति को अपने ओर आकर्षित करने के लिए सौतियाँ अनेक कोशिशें करती रहती हैं । उनमें संघर्ष होता रहता है । पति को लुभाने के लिए वह हर तरह का साज- श्रृंगार वेश-भूषा करती है । अगर पति किसी एक पत्नी को ज्यादा पसन्द करने लगता है तब दूसरी पत्नी का जीवन दर्दनाक बन जाता है, उसे अपने ही परिवार में पराया-सा महसूस होने लगता है । उसके मन में स्वाभाविक सौतियाँ डाह तथा ईर्षा भावना पनपने लगती है । अपने अधिकार के लिए उसके अन्दर की नारी प्रतिशोध लेना चाहती है । कभी-कभी इसकी आपसी जलन इतनी बढ़ जाती है कि एक दूसरी के खून की प्यासी हो जाती है । परिणामतः परिवार की शान्ति भंग हो जाती है ।

' कब तक पुकारूँ ' उपन्यास की प्यारी और कजरी में सौतन का रिश्ता है । प्यारी कजरी के बारे में जानकर क्रोधित हो जाती है । कजरी को समाप्त करने के बारे में सुखराम

को धमकाती है । कजरी भी प्यारी को गंदी गालियाँ देकर उसकी भर्त्सना करती हैं । सुखराम का मन प्यारी की ओर से हटाने के लिए प्रयास करती हैं किन्तु उसे सफलता नहीं मिलती । सुखराम दोनों को अपने साथ रखना चाहता है । किसी कारण वश सुखराम प्यारी को अपने साथ नहीं ले जा सकता तथा घायल होने के कारण उससे मिलना-जुलना भी कम हो जाता है । प्यारी को गलतफहमी हो जाती है कि कजरी के कारण सुखराम उसे भूल गया है । वह विरह की आग में तड़प जाती है। प्यारी कजरी को मिलना चाहती है तब कजरी अपनी सौत को जलाने के लिए साज-**शृंगार** करके जाना चाहती है । दोनों भी एक दूसरी से ईर्षा करती है । आपसी जलन के कारण तीनों भी चैन से नहीं रहते । लेकिन परिस्थितिवश कजरी और प्यारी आपसी द्वेष भूलकर अन्याय का विरोध करती है । सौत के रिश्ते को अमर बना देती है । चंदन मेहेतर की पाँच **बीबियाँ** पति के दिल में स्थान पाने के लिए सदा कार्यरत रहती हैं । चंदन इनमें भेदा-भेद करता है । बड़ी तथा छोटी बीबी को ज्यादा चाहता है । इसलिए बीच की तीनों **बीबियाँ**, इन दोनों से ईर्षा करती है । लेकिन अपनी वेदना को व्यक्त नहीं करता । पति के भय से **चुपचाप** अन्याय सहती रहती हैं ।

' मुर्दा का टीला ' उपन्यास की नीलूफर और वेणी वास्तव में मणिबन्ध की पत्नियाँ नहीं है फिर भी दोनों में आपसी द्वेष, जलन होती रहती है क्योंकि दोनों के साथ मणिबन्ध पति -जैसा जैसा व्यवहार करता है । दोनों की भी यह आभास होता है कि वे उसकी पत्नियाँ हैं । पहले नीलूफर को स्वामिनी बनाया जाता है फिर उसे हटाकर वेणी को वह स्थान दिया जाता है । नीलूफर के सामने सबकुछ लूट लिया जाता है । नीलूफर यह बर्दाश्त नहीं कर सकती । अपना अधिकार पाने के लिए विद्रोह करती है । लेकिन वह कामयाब नहीं रहती । मणिबन्ध षोड़शी से विवाह करना चाहता है तब वेणी के मनपर गहरी चोट लगती है । अन्त में वह सबकुछ छोड़कर भाग जाती है ।

4) विधवा समस्या

विधवा उस नारी को कहा जाता है जिसका पति मर चुका है । नारी का जीवन पति के बिना नीरस, मूल्यहीन, अबला, निस्साहाय तथा अधूरा बन जाता है । भारतीय हिंदू समाज में विधवा समस्या अत्यंत भयंकर रूप से दिखाई देती है । वैसे नारी तो पुरूषों की घृणा, उपेक्षा, शोषण

का शिकार है किन्तु ज्यादातर आत्याचार विधवा नारी पर किये जाते हैं । विधवा नारी की स्थिति दयनीय है । भारतीय विधवा नारी अनेक कठिनाइयों का सामना करके विवशता में अपना जीवन - यापन करती है । धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कार्यों में तथा उत्सव, त्यौहारों में विधवा नारी सहभागी नहीं हो सकती क्योंकि उसकी मौजूदगी एवं दर्शन भी अशुभता का सूचक माना जाता है । इतना ही नही उसे भ्रष्टा, पापिनी, कुल्टा, कई नामों से पुकारा जाता है । समाज की झूठी मान्यताओं के कारण उसे अपनी व्यक्तिगत इच्छा अभिलाषाओं की बलि देनी पड़ती है । सनातन एवं परम्परावादी मनोवृत्ती तथा मर्यादाओं के कारण उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व को कुचलकर सामाजिक, पारिवारीक जीवन में उसे अपमानित, बेबस, अस्साहाय, लांछनास्पद, शापित जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता है । उसे बन्धनों में जखड़कर उस पर जुल्म किये जाते हैं । आज समग्र भारतीय समाज वैधव्य की बीमारी से खोखला, जर्जर बनता जा रहा है । वैधव्य के पश्चात् उसकी मानमर्यादा, प्रतिष्ठा, सुरक्षा समाप्त होने लगती है । उसे बहिष्कृत किया जाता है । भारतीय समाज में विधवा नारी का जरा भी महत्व नहीं रहा है । " प्राचीन काल से रूढ़िग्रस्त समाज ने विधवा नारी को हीन समझा तथा उसके साथ घृणामय निर्मम्ता से बरताव किया है । " [75] जमींदारो द्वारा उसकी इज्जत लूटना, उसे भोग्या बनाना, उसका मुँह न देखना, बेवजह पीटाई आदि तरह से उसका शोषण किया जाता है । आजीवन कष्टमय जीवन बिताने के लिए उसे विवश किया जाता है । अपने बच्चों का लालन-पालन, उसकी भुख मिटाने के लिए विधवा नारी अपार कष्ट उठाती है । विधवा नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय तथा जिन्दा लाश की तरह होती है ।

' कब तक पुकारूँ ' उपन्यास की धूपो चमारिन असमय ही विधवा हो जाती है । पति का साथ छूटने पर अकेलापन महसूस करती है । लेकिन बच्चों को देखकर दु:ख को अंदर ही छिपाती है । अत: परिवार का सारा बोझ अपने कंधों पर उठाती है । बच्चों की खातिर दिनभर खेतों में काम करती है । गोबर की काण्डे बनाती है । परिवार को सुखी बनाने के लिए हर प्रकार की मुश्किलों का सामना करती है । खुद पर संयम रखते हुए अपना जीवन बिताती है । लेकिन गाँव के कुछ बदमाश लोग उसे बुरी नजर से देखते हैं । मगर वह किसी के सामने झुकती नहीं । प्यारी के कहने पर दरोगा रूस्तमखाँ भी एक दिन छोटी-सी भूल के लिए उसकी पीटाई करता है । रूस्तमखाँ और बाँके धूपो के कठोर एवं संयमी स्वभाव से परिचित थे । समाज में उसे नीचे दिखाने

एवं कमजोर बनाने के लिए तथा अपनी वासनापूर्तिका साधन बनाने के लिए दोनों उसे अपने जाल में फँसाने का षड़यंत्र रचते हैं । अबला धूपो की अस्मत लूट ली जाती है । अर्थात इसमें उसका दोष नहीं फिर भी समाज उसे ही दुराचारिनी, कुल्टा, पापिनी कहकर उसकी प्रताड़ना करते हैं ।

करनट जाति में विधवा नारी दोबारा शादी कर सकती है लेकिन उस में जवानी का जोश हो तभी वह ऐसा कर सकती है । इसीला की मृत्यु के पश्चात् सौनो अकेली हो जाती है । प्यारी भी उसे ठुकराती है । वह बेबस हो जाती है । सौनो का कोई यार भी नहीं है फिर भी जीवन - यापन के लिए किसी साथी को ढूंढ़ने की कोशिश करती है ।

5) दासत्व की समस्या

नारी जाति के शोषण का असली रूप दासी है । दासी नारी को ना खानदान का पता होता है नहीं अपने माता-पिता का इसलिए उसे नीच कहा जाता है । इसके विपरीत कुलीन नारी निश्चित खानदान तथा व्यक्ति का वंश आगे चलाती है । इसलिए प्राचीन काल में कुलीन नारी की खास अहमियत थी । उसे आदर, सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था । दासी नारी की अत्यन्त दर्दनाक स्थिति थी । उसके साथ पशु से भी गया - बिता सुलुक किया जाता था । उसे घृणित एवं तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता था । वह केवल पुरूषों के मनोरंजन एवं कामपूर्ति का साधन थी ।

' मुर्दो का टीला ' उपन्यास की महामंत्री आमेन - रा कहता है -- " जो स्त्री कुलीन नहीं होती वह पुरूष की स्थायी संपत्ति नहीं होती । जो अन्य स्त्रियों के छल में फँसता है वह हापी के भीषण आवर्तो में घूमने लगता है । वह तीखा विष है ।जिससे मनुष्य को कभी मुक्ति नहीं मिल सकती । " [76] इस उपन्यास में उपन्यासकार ने दासी नारी जीवन का बड़ा ही दर्दभरा तथा यथार्थ रूप में चित्रण किया है जिसे पढ़कर कठोर से कठोर मन का व्यक्ति द्रविभूत हो उठता है । नीलूफर और हेका दोनों दासी नारियाँ हैं । दोनों अपने माता-पिता एवं कुल को

जानती तक नहीं । बचपन में ही इन्हें दासियाँ बनाया जाता हैं । बेबस होकर बाजार में नग्नावस्था में बिकने के लिए खड़ा होना पड़ता है । खरीददार दासी को बेजान समझकर उसका क्रय-विक्रय करते हैं । जो भी उन्हें खरीदता है, उनका शोषण करता है । दासी किसीसे प्रेम नहीं कर सकती। हेका और अपाप जब एक दूसरे के बाहुपाश में बन्ध जाते हैं तब मालिक कोड़ेसे उनकी पिटाई करता है ।

मणिबन्ध नीलूफर, हेका और अपाप को खरीदता है । नीलूफर स्वामिनी बनकर कुछ दिनों के लिए दासता के शोषण से मुक्ति पाती है । किन्तु निरीह हेका का मानसिक एवं शारीरिक शोषण होता है । उसे खिलौना समझकर कोई भी पुरूष उससे अपना मनोरंजन करता है । हेका किसी की इच्छा का विरोध नहीं कर सकती क्योंकि वह दासी है । दासी के लिए वैवाहिक जीवन की स्वाधीनता नहीं है । वह स्वतंत्र रूप से अपने पति के साथ नहीं रह पाती । अपाप हेका का पति है किन्तु उसके शरीर पर अपाप का अधिकार नहीं है । श्रेष्ठि मणिबन्ध अपने कक्ष में हेका के साथ कामक्रीड़ा करता है और अपाप द्वार पर कुत्ते की तरह खड़ा रहता है । अक्षय प्रधान कभी भी हेका पर अपना अधिकार जताता है और अपनी हविश बुझाता है । स्वामी के हुकूम पर चलना दासी अपना फर्ज समझती है ।

दासी किसी भी कार्य में लज्जा महसूस नहीं करती । वह कभी पतिव्रता नारी भी नहीं बन सकती क्योंकि विवशता से कई पुरूषों के साथ उसक यौन सम्बन्ध रहते है । अनैतिकता, अपवित्रता जैसे शब्द उनके दायरे में नहीं आते । नीलूफर और हेका को भी पेट की खातिर कई पुरूषों के साथ शरीर सम्बन्ध रखना पड़ता है । कुलीन नारी भी दासी के सामने शर्माती नहीं क्योंकि दासी पुरूषों के सामने नग्न रूप से पेश आती है । अतः ऐसी नारी से लज्जा महसूस नही होती । स्वामी जब चाहें दासी से मनोरंजन करता है । उब जाने पर उसे बेचता या ठुकराता है । श्रेष्ठि मणिबन्ध नीलूफर से उब कर वेणी को अपनाता है । नीलूफर का फिर से शोषण शुरू होता है । दासी की अपनी इच्छा अभिलाषा नहीं होती । वह स्वामी के हाथों की कठपुतली बन जाती है ।

6) बलात्कार की समस्या

नारी की निर्बलता, असहायता, मजबूरी तथा पुरूषों की वासनात्मकता आदि कई कारणों से नारी का शोषण हो रहा है । कामांध पुरूष उसे केवल वासनापूर्तिका साधन मानकर उसकी कमजोरियों का लाभ उठाकर उसके सतीत्व को नोंच - नोंच कर घायल कर रहा है । नारी कहीं भी सुरक्षित नहीं रह पाती । दिन दहाड़े उसकी इज्जत लूटी जा रही है । पुरूष अपने नैतिकता को अनदेखा करके बलात्कार जैसा घृणित कृत्य कर रहा है । पुरूष का तो क्षणिक मनोरंजन हो सकता है किन्तु नारी को अपने जीवन में इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है । उसके जीवन का मानो रस ही सोख लिया जाता है । ऐसी बलात्कारिता नारी को समाज घृणा का पात्र बना देता है । उसके चरित्र पर न मिटनेवाला दाग लगा दिया जाता है । यह कैसा इन्साफ है, गुनाह एक व्यक्ति करे और उसकी सजा कोई दूसरा ही सहे ? किन्तु समाज में ऐसा ही हो रहा है । नारी का इसमें कोई कुसुर न होकर उसे ही बदचलन कहा जाता है । बलात्कारिता नारी खुद अपने आप को इसकी सजा देती है । बलात्कार की समस्या नारी के लिए पीड़ादायक है, जिससे नारी का अस्तित्व ही मिटा दिया जाता है ।

' कब तक पुकारूँ ' की धूपो चमारिन पति की मृत्यु के पश्चात् घर गृहस्थी का भार खुद उठाते हुए अपना जीवन व्यतीत करती है । लेकिन समाज के कुछ इज्जतदार समझे जाने वाले लोग ठाकुर चरणसिंह, हरनाम, बाँके, धूपो की असहायता एवं अकेलेपन का लाभ उठाकर उसके साथ बलात्कार करते हैं । धूपो पंचों से अपने पर हुए अन्याय, आत्याचार का इन्साफ माँगती है लेकिन पंच उसेही दोषी एवं पापिनी कहते हैं । धूपो अपने चरित्र पर लगे इस कलंक को आत्मबलिदान से मिटाती है ।

सूसन युरोपियन लड़की है । अतः उसपर पाश्चात्य संस्कारों की छाप है । यौन सम्बन्ध उनके लिए निषिद्ध नहीं हैं । किन्तु भारत देश में रहकर सूसन यहाँ के संस्कारों को ग्रहण करती है। अपने पुराने दोस्त लॉरेन्स के साथ वह नशापान करती है किन्तु शरीर सम्बन्ध रखना नहीं

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

चाहती । कामांध लॉरेन्स सूसन का विश्वास जीतकर उसके साथ बलात्कार करता है । सूसन आम नारियों की तरह कमजोर नही है । वह जीना चाहती है । किन्तु लॉरेन्स के अपराध का प्रायश्चित खुद कर लेती है । सूसन आजीवन अविवाहित रहती है ।

7) रखैल समस्या

सामन्ती समाजव्यवस्था में पत्नी के होते हुए पुरूष कई नारियों के साथ अनैतिक सम्बन्ध रखने की प्रथा रही है । रखैल संस्कृति को आश्रय देने की कोशिश की गयी है । नारी के प्रति मोह, असहायता, गरीबी, जातीय संस्कार आदि कारणों से तथा समाज के जमींदार, पुलिस, ठाकुर, धनी पुरूष नारी की लाचारी, कमजोरी का अनुचित लाभ उठाकर उसे रखैल का जीवन बिताने के लिए विवश करते है । भूख मिटाने के लिए, परिवार की सुरक्षा, धन प्राप्ति के लिए भी नारी रखैल बनने के लिए बाध्य हो जाती है । ऊँचे खानदान के पुरूष निम्न जाति की नारियों से अपनी शारीरिक प्यास बुझाने के लिए अवैध सम्बन्ध रखते हैं किन्तु उन नारियों के साथ विवाह के बन्धन में नहीं बँध जाते । नारी को फूल समझकर उसे सूँग लिया जाता है । कुछ दिनों पश्चात् पैरोंतले कुचल दिया जाता है । जब तक नारी में जवानी की महक रहती है तब तक उसे भोगा जाता है लेकिन जवानी खत्म होते ही उसे बेरहमी से ठुकराया जाता है । रखैल नारी की समाज में कोई इज्जत नहीं रहती । समाज के ताने सुनकर उसका नारीत्व घायल हो जाता है । ठुकराने के पश्चात् वह दूसरा सहारा ढूँढ़ती है मगर उसे सहारा न मिलने पर उसका जीवन नरक बन जाता है । ऐसे पीड़ित रखैल नारी के साथ पुरूष पत्नी की भाँति बर्ताव करता है, सम्बन्ध रखता है लेकिन कभी भी उसे पत्नी का दर्जा नहीं देता । समाज में विवाहित नारी का जितना शोषण होता है इससे कई अधिक रखैल नारी का होता है ।

' कब तक पुकारूँ ' उपन्यास की बेला पति एवं बच्चों की भूख मिटाने के लिए तथा सुख-सुविधाओं के लिए दरोगा हरनाम की रखैल बनती है । प्यारी अपनी करनट जाति एवं सुखराम के निर्भय जीवन के लिए तथा हुकूमत की लालसा से दरोगा रूस्तमखाँ की रखैल बनती है ।

रूस्तमखाँ के सम्पर्क में रहकर प्यारी को यौन बीमारी हो जाती है । प्यारी इसे सहती है । लेकिन स्वस्थ होने पर रूस्तमखाँ प्यारी को निकालकर धूपो को अपनी रखैल बनाना चाहता है । सौनो पति की मृत्यु के पश्चात जीवन यापन के लिए किसी की रखैल बनने का फैसला करती है । अतः एक ये तीनों नारियाँ निम्न जाति की है । इसलिए ऊँचे जाति के पुरूष उन्हें डरा धमकाकर एवं पैसों का लालच दिखा कर उन्हें रखैल बनने के लिए विवश कर देते हैं ।

' मुर्दों का टीला ' में वेणी और नीलूफर श्रेष्ठि मणिबन्ध की रखैल हैं । नीलूफर के सौन्दर्य पर मोहित होकर मणिबन्ध कुछ दिन उससे अपना दिल बहलाता है । किन्तु वेणी के आगमन से नीलूफर को निकाल कर वेणी को रख लेता है । श्रेष्ठि मणिबन्ध नीलूफर और वेणी के साथ विवाह नहीं करना चाहता । लेकिन दोनों के साथ शरीर सम्बन्ध स्थापित करता है ।

8) कुँवारी माता की समस्या

भारतीय संस्कृति के अनुसार नारी का नारीत्व तब पूर्णत्व प्राप्त करता है जब वह माँ बनती है । नारी का मातृरूप स्वर्ग से भी श्रेष्ठ, महान एवं गौरवशाली माना गया है ।

' जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी । '

बच्चों को जन्म देकर ही वह समाज में सम्मान प्राप्त कर सकती है तथा इसमें ही अपने जीवन की सफलता, सार्थकता मानती है । समाज में माता का महत्वपूर्ण स्थान है । सन्तानविहीन नारी को बांझ कहकर समाज में उसका हर वक्त अपमान होता रहता है तथा उसकी उपेक्षा की जाती है । उसके दर्शन भी अशुभ माने जाते हैं । लेकिन समाज उस नारी के मातृत्व को सम्मर सम्मान प्रदान करता है जो विधिवत् विवाह संस्कार के बाद बच्चे को जन्म देती है । विवाहपूर्व सम्बन्धों से प्राप्त मातृत्व स्वीकार नहीं करता । उस नारी की तो प्रताड़ना की जाती है । यौन सम्बन्धों की पवित्रता का नारी के जीवन में अत्यंत महत्व है लेकिन रूढ़िग्रस्त समाज के कारण नारी भोग्या बन गयी है । नारी सुकोमलता, भोलेपन का अनुचित लाभ उठाकर उस पर जबरदस्ती मातृत्व लादनेवाले कामांध पुरूष समाज में कम नहीं हैं । ऐसी घिनौनी हरकतें करनेवाले पुरूष अनिर्बन्धता से शरीर सम्बन्ध स्थापित करते

है लेकिन कुँवारी नारी अवैध मातृत्व का बोझ उठाकर जिन्दगीभर कलंकिनी जीवन गुजारती है । ऐसी नारी जीवन की हर कठिनाईयों का सामना करके अपने बच्चे का पालन करती है । समाज माता एवं सन्तान को चैन से जीने नहीं देता । उनकी ओर घृणा एवं अनैतिकता की दृष्टि से देखा जाता है । नारी का जीवन असहाय और पीड़ादायक बन जाता है ।

' कब तक पुकारूँ ' उपन्यास में सूसन की दोस्ती, विश्वास का नाजायज लाभ उठाकर लॉरेन्स अपनी वासना का शिकार बनाकर उसकी गोद भर देता है । वह खुद से घृणा करने लगती है फिर भी मातृत्व के एहसास से सूसन सन्तुष्ट हो जाती है । किन्तु उसके मन में द्वंद्व चलता है कि समाज उसके मातृत्व और बच्चे को स्वीकार नहीं करेगा । सूसन बच्चे को जन्म देना चाहती है । समाज के डर से बच्ची को सुखराम को सौंपकर वह अपने देश चली जाती है । वैवाहिक जीवन को त्यागकर पीड़ित जीवन बिताती है ।

9) दैहिक विक्रय की समस्या

दैहिक विक्रय सामन्ती व्यवस्था का घृणित रूप है । प्राचीन काल से समाज में नारी जाति का एक वर्ग दैहिक विक्रय करता हुआ दिखाई देता है । समाज एवं समय के साथ उसका रूप बदलता गया है । जब कई पुरूषों के साथ नारी यौन सम्बन्ध स्थापित करती है तब उसे ' वेश्या ' कहा जाता है । अनेक कारणों से नारी दैहिक विक्रय करती है । इसके मूल में पुरूषों की वासनामय दृष्टि और आर्थिक अभाव है । धन, दौलत, प्रतिष्ठा, सत्ता आदि के बल पर नारी को उपभोग लिया जाता है । नारी विवश होकर इस प्रवृत्ति की ओर आकृष्ट होती है । दैहिक विक्रय का विकास सामाजिक, नैतिकता के हनन का सूचक है । भारतीय समाज व्यवस्था में वेश्या व्यवसाय करनेवाली नारी तो भ्रष्टा, पतिता तथा तिरस्कार की दृष्टि से देखा जाता है जबकि समाज ही नारी को वेश्यावृत्ति की दलदल में धकेल देता है । इस पथ पर चलने के लिए मजबूर कर देता है । पाश्चात्य देशों में यौनेच्छा पूर्ति की स्वाधीनता है इसलिए वहाँ ऐसी नारी को हीन नहीं समझा जाता ।

डॉ. रांगेय राघवजी ने आलोच्य उपन्यासों में दैहिक विक्रय करनेवाली नारियों का ऐसा

चित्रण किया है जिसे पढ़कर पाठक के मन में उन नारियों के प्रति घृणा के बजाय सहानुभूति निर्माण होती है । ' कब तक पुकारूँ ' मे करनट जाति की नारियाँ यौन सम्बन्धों में स्वच्छंद हैं । पारिवारिक अभावों की पूर्ति तथा परिवार के सदस्यों के सुरक्षा के लिए दैहिक विक्रय का व्यवसाय करने के लिए विवश है जैसे - बेला, प्यारी, सौनो । कजरी कामपूर्ति एवं पेट के खातिर वेश्या व्यवसाय करती है किन्तु सुखराम को अपनाकर इस व्यवसाय को त्याग देती है । ये नारियाँ अपने तन की बिक्री करने में अनैतिकता महसूस नहीं करती बल्कि नटनियों का व्यवसाय करना अपना फर्ज समझती है । ' मुर्दो का टीला ' में नीलूफर, हेका, चंद्रा भूख मिटाने के लिए शरीर की बिक्री करती है । परिणामतः दैहिक विक्रय उनके लिए समस्य बन जाती है। । कई **बीमारियों का** सानना करना पड़ता है ।

10) **सामाजिक कुरीतियों की समस्या**

सदियों से मानव समाज में अनेक रीति **रीवाज** प्रचलित रहें हैं । इसमें से कई रीति **रीवाज**. मानव जाति एवं नारी जाति के लिए हानिकारक होकर भी परम्परा से इनका पालन आनेवाली पीढ़ि करती रहती है ।

' कब तक पुकारूँ ' में **करनट जाति में रीवाज** प्रचलित है कि लड़की जवान होनेपर उसका कौमार्य भंग ठाकुरों द्वारा किया जाता है इसके पश्चात् यह जाति उस लड़की को अपनाती है । चंदन मेहेतर जादू टोने की सफलता के लिए स्त्री को मरघट में नंगी नचाता है । ' मुर्दो का टीला ' में नोअन - जो - दड़ो के एक गाँव में यह रीति है कि देवताओं को प्रसन्न कर गाँव की समृद्धि एवं मांगल्य के लिए किसी युवती को योगी द्वारा उसके साथ खुलेआम बीभत्स साधना करके बलि दी जाती है । गाँव के लोग घृणित तमाशा **चुपचाप** देखते हैं किन्तु उस नारी की वेदना, चीत्कार की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता । सामाजिक कुरीतियों के कारण नारी का घोर शोषण किया जाता है ।

11) पति - पत्नी के रिश्तों की समस्या

भारतीय संस्कृति में पति पत्नी के रिश्ते को बहुत बड़ा महत्व है । विवाह द्वारा स्त्री-पुरूष को यौन सम्बन्ध स्थापित करने के लिए समाज मान्यता देता है । शादी के उपरान्त दोनों को भी एक दूसरे के प्रति एकनिष्ठ रहना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है । उन्हें समाज में स्वतंत्र रूप से वैवाहिक जीवन जीने के लिए अधिकार प्राप्त हो जाता हैं । किन्तु पुरूष की वासनामयी दृष्टि के कारण कभी-कभी वे अपना वैवाहिक जीवन स्वतंत्रता से व्यतीत नहीं कर पाते । ज्यादा तर दुःख नारी को ही उठाना पड़ता है ।

' कब तक पुकारूँ ' में बेला, सौनो, प्यारी शादी शुदा होकर किसी की रखैल बन जाती है । प्यारी सुखराम के साथ सुखपूर्ण वैवाहिक जीवन बिताती है । किन्तु रूस्तमखाँ के कारण दोनों में दरारें निर्माण होती हैं । रूस्तमखाँ के घर जाने पर प्यारी सुखराम की भलाई के लिए उससे शरीर सम्बन्ध नहीं रखता । सुखराम कजरी से शादी करता है । जिसका दुःख प्यारी को होता है । ' मुर्दा का टीला ' में अपाप हेका का पति होकर उसके शील की रक्षा नहीं कर सकता । कोई भी हेका पर अपना हक जताता है ।

12) आत्महत्या की समस्या

आत्महत्या का मतलब है स्वयं मौत को गले लगाना । मानसिक विकृति, पारिवारेक संघर्ष, जीवन की अस्थिरता, दारिद्रय, नैराश्य की स्थिती, प्रिय व्यक्ति द्वारा अविश्वास दर्शाना प्रिय व्यक्ति खो जाना, आर्थिक अभाव, अहंभाव की तृष्टि, समाजहित के लिए आदि कई कारणोंसे व्यक्ति जीवन से मुँह फेरकर आत्महत्या की ओर बढ़ता है । आत्महत्या की समस्या ने समग्र संसार को घेर लिया है । अन्य देशों की तुलना में भारत में आत्महत्या का प्रमाण कम है । लेकिन जितनी खुदखुशियाँ होती हैं उसमें अधिक मात्रा नारी की हैं । नारी में भावुकता, त्याग भावना, मानसिक दुर्बलता होती है । इसलिए वह आत्महत्या की ओर आकर्षित होती है । परिवार में

अपमान, उपेक्षा मिलने पर तथा उचित सम्मान न मिलने पर, अस्मत लूटने पर नारी के लिए जीवन नरक बन जाता है । ऐसे वक्त नारी खुदखुशी का पथ अपनाती है ।

' कब तक पुकारूँ ' मे सुखराम की माँ बेला पारिवारिक संघर्ष, आर्थिक अभाव, पति द्वारा उपेक्षा, बेटी की घृणा को बर्दाश्त नहीं करती । उसे अपना जीवन अस्थिर लगने लगता है । इसलिए बेला आत्महत्या कर लेती है । विधवा धूपो चमारिन की इज्जत लूट जाने पर बस्तीवाले उसे बहिष्कृत करते हैं । धूपो को महसूस होता है कि समाज में वह अपमानित जीवन नही बीता सकती। अतः उसे मर जाना ही श्रेयस्कर लगता है । चारित्र्य पर लगे कलंक को मिटाने के लिए धूपो प्राणत्याग करती है ।

13) आर्थिक समस्या

नारी की आर्थिक पराधिनता उसके लिए अभिशाप है । प्राचीन काल से नारी को बन्धनों में जकड़कर उसका क्षेत्र सीमित किया है । अब स्थिती बदल रही है, शिक्षा के कारण नारी को आर्थिक स्वतंत्रता मिल रही है । सामन्तवादी समाज में नारी केवल घर के ही काम करती है और पुरूष पैसे कमाता है । लेकिन निम्न जाति में स्त्री और पुरूष दोनों कमाते है । वैसे देखा जाए तो निम्न जातियों में स्त्री ही आर्थिक अभावों की पूर्ति करती है । पारिवारिक अभावों की चिन्ता नारी को ही सताती है और इन अभावों की पूर्ति करने का प्रयास भी नारी करती है । स्त्री - पुरूषों के कार्यो में विभाजन की सीमा नहीं रहती ।

डॉ. रांगेय राघव के आलोच्य उपन्यासों की निम्न जाति का नारियाँ अशिक्षित है । अतः आर्थिक भावन के लिए उनके पास कोई साधन नहीं है । ये नारियाँ अपने यौवन का सौदा अन्य पुरूषों से करती है । जवानी के बल पर मुश्किलों से परिवार की रक्षा करती है । ' कब तक पुकारूँ ' मे करनट जाति की नारियाँ आर्थिक भावन के लिए स्वतंत्र है । प्यारी, बेला, सौनो खेल तमाशा दिखाकर एवं अपना तन बेचकर पैसे कमाती है और अपनी घर गृहस्थी चलाती है । कजरी भी सुखराम से शादी होने से पहले आर्थिक प्राप्ती के लिए वेश्या व्यवसाय करती थी । धूपो चमारिन

परिवार की जिम्मेदारी निभाने के लिए गोबर के काण्डे बनाती है, खेतों में काम करती है ।

' मुर्दो का टीला ' में नीलूफर, हेका, वेणी, चंदा आर्थिक भावन के लिए कई पुरूषों से सम्बन्ध रखती है । वेणी नृत्यगान करती है । यह नारियाँ जीने के लिए पुरूषों पर निर्भर नहीं हैं । अपने नारी-त्व नारीत्व की बलि देकर धन कमाने के लिए शरीर बेचती है ।

निष्कर्ष,

प्यारी, कजरी, चंदा, बेला, सौनो, धूपो, सूसन, चंद्रा (कब तक पुकारूँ), नीलूफर, हेका, चंद्रा (मुर्दो का टीला) स्वाधीनता प्रेमी नारियाँ हैं । ये नारियाँ दासता से मुक्ति चाहती है तथा अपनी इच्छानुसार जीवन जीना चाहती है । इसलिए वे संघर्ष करती है । इसके लिए अपना सर्वस्व दाव पर लगाती है । धन, वैभव उन्हे आकर्षित नहीं करता । इसमें आत्मसम्मान, आत्मगौरव, स्वाभिमान है तथा इसके रक्षा के लिए ये नारियाँ मरते दम तक संघर्ष करती है । इन नारियों में साहस, धैर्य, सहनशीलता है । उन्हें जीवन के प्रति अटूट आस्था है । अनेक कठिनाईयों एवं मुश्किलों का सामना करती है, यहाँ तक की अपना तन भी अन्य पुरूषों को देती हैं । मानसिक एवं शारीरिक शोषण के बावजूद भी वे जीना चाहती हैं । किन्तु विपरीत परिस्थितियों से विचलित नहीं होती । डॉ. राघवजी की नारियाँ विद्राहिणी है । वे किसी के हाथों की कठपुतली नहीं बनना चाहती । इस नारियों में बुद्धि चातुर्य एवं दूसरों के प्रति सहानुभूती है । ये नारियाँ जीवन में परिवर्तन चाहती है तथा अपने जीवन में परिवर्तन कर लेती हैं । कजरी सुखराम से विवाह करती है, प्यारी कजरी के साथ सौतन का अनोखा रिश्ता स्थापित करती है, चंदा नीलू को छोड़ती है, नीलूफर गायक के साथ रहती है, हेका श्रेष्ठि मणिबन्ध के दास्यत्व को ठुकराती है, राजकुमारी चंद्रा वैभव, विलास त्यागकर आम नारी की तरह अभावों में अपना जीवन बिताती है । ये नारी पात्र प्रभावशाली है । प्यारी और कजरी सुखराम के चरित्र को प्रभावित करती है । गायक के चरित्र को नीलूफर प्रभावित करती है। नीलूफर, हेका, प्यारी, कजरी, चंदा, धूपो आदि जीवन संघर्ष में पराजित होकर मर जाती है । उनकी मृत्यु त्रासदी को दर्शाती है । डॉ. रांगेय राघव को आलोच्च उपन्यासों की नारी पात्रों में स्वाभाविकता एवं मानवीयता है । ये नारियाँ दुःख, दर्द, पीड़ा को पहचानती है । अतः उनकी

कमजोरियाँ, इच्छा, आकाक्षाएँ मानवीय हैं । राघवजी के आलोच्य नारी पात्र सशक्त एवं सोद्देश्य है ।

आलोच्य उपन्यासों की नारी पात्रों को जीवन यापन करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जैसे - बहुविवाह, अनमेल विवाह, विधवा, दासत्व, कुँवारी माता, रखैल, दैहिक विक्रय, बलात्कार, सौतियाँ डाह, सामाजिक कुरीतियाँ, पति - पत्नी के रिश्तें, आत्महत्या, आर्थिक समस्या आदि । इन समस्याओं के कारण इन नारियों का जीवन अस्थिर बनता है तथा इनका शारीरिक शारीरिक, मानसिक शोषण होता है । पुरूष उन्हें एक खिलौना समझता है जब चाहे खेले, जब चाहे फेके । उसके साथ पशु जैसा बर्ताव किया जाता है । समाज नारियों को बहिष्कृत तथा घृणा की दृष्टि से देखता है । फिर भी ये नारियाँ इन समस्याओं से विचलित नहीं होती बल्कि इनका डटकर मुकाबला करती है । अपना अस्तित्व बनाए रखती हैं ।

संदर्भ

1. डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ पृ. 50
2. वही पृ. 149
3. वही पृ.46
4. वही पृ. 46
5. वही पृ. 48
6. वही पृ. 48
7. वही पृ. 50-51
8. वही पृ. 51
9. वही पृ. 51-52
10. वही पृ.53-54
11. वही पृ. 55
12. वही पृ.82
13. वही पृ. 86
14. वही पृ. 86
15. वही पृ. 264
16. वही पृ. 53
17. वही पृ. 147-148
18. वही पृ. 49
19. वही पृ. 291
20. वही पृ. 328
21. वही पृ. 74
22. वही पृ. 74

23. डॉ. रांगेय राघव - कब तक पुकारूँ पृ. 75
24. वही पृ. 99
25. वही पृ. 411
26. वही पृ. 465
27. वही पृ. 469
28. वही पृ. 527
29. वही पृ. 593
30. वही पृ. 593
31. वही पृ. 598
32. वही पृ. 594
33. वही पृ. 593
34. वही पृ. 593-94
35. वही पृ. 594
36. वही पृ. 594
37. वही पृ. 583
38. वही पृ. 308
39. वही पृ. 23
40. वही पृ. 29
41. वही पृ. 45
42. वही पृ 549
43. डॉ. रांगेय राघव - मुर्दो का टीला पृ.75
44. वही पृ. 8
45. वही पृ. 85
46. वही पृ. 80
47. वही पृ. 85
48. वही पृ. 169

49. डॉ. रांगेय राघव - मुर्दो का टीला - पृ. 220

50 वही पृ. 228-229

51. वही पृ. 235

52. वही पृ. 229

53. वही पृ. 233

54. वही पृ. 257

55. वही पृ. 257

56. वही पृ. 280

57. वही पृ. 85

58. वही पृ. 227

59. वही पृ. 30

60. वही पृ. 102

61. वही पृ. 125

62. वही पृ. 133

63. वही पृ. 133

64. वही पृ. 133

65. वही पृ. 161

66. वही पृ. 365

67. वही पृ. 369

68. वही पृ. 346

69. वही पृ. 302.

70. डॉ. आ. ह. साळुंखे - हिंदू संस्कृति आणि स्त्री. पृ. 2

71. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी - बाणभट्ट की आत्मकथा - पृ. 110

72. डॉ. रोहिणी अग्रवाल - हिंदी उपन्यासों में कामकाजी महिला पृ. 243

73. डॉ. रामेश्वर नारायण ' रमेश ' साहित्य में नारी - विविध संदर्भ पृ. 10

74. आशाराणी व्होरा - नारी शोषण - आईने और आयाम - पृ. 231

75. प्रा. अर्जुन धरत-नागार्जुन के नारी पात्र - पृ. 128

76. डॉ. रांगेय राघव - मुर्दो का टीला - पृ. 183